अध्याय 2

# राज्य सरकार

बिहार सरकार

पिछली कक्षा में हमने यह जाना कि सरकार तीन स्तरों पर काम करती है–स्थानीय, राज्य और केन्द्र। स्थानीय सरकार के बारे में हमने पिछली कक्षा में विस्तार से पढ़ा है। इस अध्याय में हमलोग जानेंगे, राज्य स्तर पर सरकार कैसे कार्य करती है, विधायक कौन होता है, विधानसभा सदस्यों और मंत्रियों की क्या भूमिका है एवं लोग सरकार के सामने अपनी बातें कैसे रखते हैं?

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED
BSTBPC

**अपने आस पास सरकार द्वारा किये जाने वाले कार्यों की एक सूची बनाएँ।** ?

आज पंचायत भवन पर विधायक जी आने वाले हैं। चुनाव प्रचार के दौरान उन्होंने इस गाँव में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खुलवाने का वादा किया था जो आज तक नहीं खुला। गाँव के मुखिया ने लोगों को पंचायत भवन पर बुलाया है। जब मनीष के पिता पंचायत भवन के लिए निकले तो मनीष भी उनके साथ हो लिया। उसने रास्ते में कई लोगों को विधायक के बारे में बातें करते सुना। यहाँ के अधिकतर लोग समय से अपना इलाज नहीं करवा पाते, क्योंकि गाँव में स्वास्थ्य केन्द्र नहीं है और शहर का अस्पताल दूर है। जब किसी का स्वास्थ्य बिगड़ता है तो उन्हें शहर के अस्पताल ले


www.aksol.in

जाना पड़ता है। दूरी के कारण कभी-कभी तो मरीज की मौत अस्पताल ले जाने के रास्ते में ही हो जाती है।

कुछ ही समय इन्तजार के बाद विधायक जी सबके बीच मौजूद हुए। गाँव के लोग नाराज़ नज़र आ रहे थे कि अब तक स्वास्थ्य केंद्र क्यों नहीं खुला। विधायक ने फिर कहा कि वह जल्दी ही स्वास्थ्य केंद्र खोलने की अनुमति दिलवा देंगे। मनीष को समझ में नहीं आया। उसने अपने पिताजी से पूछा, "ये स्वास्थ्य केन्द्र खोलने के लिए पैसे क्यों नहीं दे रहे हैं। पिताजी ने जवाब दिया कि, "स्वास्थ्य केंद्र खोलने के लिए पैसा सरकार के स्वास्थ्य विभाग द्वारा दिया जाएगा।" पर मनीष अभी भी समझ नहीं पाया। आइए, हम भी इन बातों को इस पाठ में समझें।

## विधायक का चुनाव

भारत के सभी राज्यों में एक विधानसभा है। इस सभा के सदस्यों को विधायक (एम०एल०ए०) कहते हैं। ये कैसे चुने जाते हैं?

vkb;s ge tku&

प्रत्येक राज्य कई विधानसभा क्षेत्रों में बँटा हुआ होता है। उदाहरण के लिए रीता देवी 2005 में पहली बार निर्मलपुर विधानसभा से चुनाव लड़ रही थीं। उनके साथ इस विधानसभा क्षेत्र से सात उम्मीदवार एवं अन्य लोग भी अपनी-अपनी किस्मत आजमा रहे थे। ये उम्मीदवार अलग-अलग पार्टियों की ओर से खड़े हुए थे। इनमें कोई कांग्रेस पार्टी से, कोई भा.ज.पा. से, कोई रा.ज.द. से, कोई ज.द.यू. से तो कोई लो.ज.पा. से था। दो उम्मीदवार निर्दलीय भी थे

जो किसी भी पार्टी से नहीं बल्कि अपने दम पर चुनाव लड़ रहे थे।

सभी उम्मीदवारों ने पहले अपना नामांकन भरा। उसके बाद अपने प्रचार के लिए अपनी अपनी पार्टी के नेताओं का कार्यक्रम विधानसभा क्षेत्र के अलग अलग स्थानों पर आयोजित किया। कोई भी गाँव या कस्बा ऐसा नहीं था जहाँ लोगों ने अपनी पार्टी का प्रचार न किया हो। इस तरह से सभी ने अपनी अपनी पार्टी के विचारों को लोगों तक पहुँचाया एवं अपने उम्मीदवारों के लिए वोट माँगे। प्रचार के दौरान सभी पार्टियों ने अपने उम्मीदवारों की जीत सुनिश्चित करने के लिए ढेर सारे वादे किये। रामअवतार ने मनीष के गाँव में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खुलवाने का वादा किया।

मतदान यूनिट

फिर आया चुनाव (मतदान) का दिन। निर्मलपुर विधानसभा के अधिकतर लोगों ने सुबह 7 बजे से ही अपनी पसंद के उम्मीदवार की जीत सुनिश्चित करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन के द्वारा अपने-अपने मतों का प्रयोग किया। शाम पाँच बजे सबकी किस्मत इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन में बंद हो गई। उम्मीदवारों के प्रशंसक अपनी पसंद के उम्मीदवार की जीत की कामना कर रहे थे। कुछ दिनों बाद आया वोटों की गिनती का दिन। कुछ लोग टी.वी. से सटे हुये थे तो कुछ लोग मतगणना केन्द्र (जहाँ पर मतों की गिनती होती है) की ओर जा रहे थे। दो बजे गिनती समाप्त हो गई।

ई०वी०एम०

1. शिक्षक की सहायता से अपने जिले के मानचित्र में अपने विधानसभा क्षेत्र को दर्शाएँ।
2. 'उम्मीदवार' व 'पार्टी' का अर्थ समझाएँ।

?

3. चुनाव प्रचार क्यों किया जाता है? चर्चा करें।
4. अलग-अलग उम्मीदवार क्यों होते हैं? इससे क्या फायदा होता है?
5. इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन के द्वारा मत कैसे दिया जाता है, शिक्षक के साथ चर्चा करें।
6. आप अपने क्षेत्र के वर्तमान एवं पूर्व विधायक के नाम बताएँ।
7. चुनाव प्रक्रिया शुरू होने से समाप्ति तक पूरी प्रक्रिया को विद्यालय में टोलियाँ बनाकर नाटक के रूप में प्रस्तुत करें

?

रामअवतार को सभी उम्मीदवारों में सबसे अधिक मत मिले। निर्वाचन पदाधिकारी ने रामअवतार के विजयी होने की घोषणा की। इस प्रकार वह चुनाव जीत कर अपने क्षेत्र के विधायक बन गए। ये पाँच वर्षों के लिए निवार्चित हुए।

BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

## सरकार का बनना

कुल विधानसभा क्षेत्रों में जिस राजनीतिक दल को आधे से ज्यादा निर्वाचन क्षेत्रों में जीत मिलती है, राज्य में उस दल को बहुमत में माना जाता है। बहुमत प्राप्त करने वाले एवं सरकार बनाने वाले राजनीतिक दल को सत्ता पक्ष एवं अन्य सभी दलों को विपक्ष कहा जाता है। उदाहरण के लिए आगे दी गई तालिका को देखें। बिहार में कुल 243 विधानसभा क्षेत्र हैं। विभिन्न राजनीतिक दल के उम्मीदवार ने 2005 का विधानसभा चुनाव जीता और वे विधायक बन गए। विधानसभा में कुल विधायकों की संख्या 243 है इसलिए बहुमत प्राप्त करने के लिए किसी भी राजनीतिक दल को आधे से एक अधिक विधायकों की आवश्यकता होगी। अर्थात 243 विधायकों में से कम से कम 122 की आवश्यकता होगी।

बहुमत के नियम की आवश्यकता क्यों है? वह इसलिए कि सरकार उस दल की बननी चाहिए जिस दल को ज्यादा से ज्यादा लोग चाहते हों। लोगों ने अलग-अलग क्षेत्रों से अपनी-अपनी पसंद के उम्मीदवारों को चुना, जो विधायक बनकर विधानसभा में आए। जिस दल के पास आधे से अधिक विधायक हैं, अर्थात बाकी अन्य दलों की तुलना में उसके पास आधे से अधिक विधायक हैं, इसका अर्थ हुआ कि बाकी अन्य दलों की तुलना में

उसके विधायक ज्यादा हैं। यानी उस दल को लोग ज्यादा चाहते हैं। इसलिए वह सरकार बना सकता है। कई बार किसी एक दल के पास अधिक विधायक तो होते हैं लेकिन आधे से अधिक नहीं। यानी बाकी सब की तुलना में उसके पास बहुमत नहीं होता है। ऐसी स्थिति में गठबन्धन वाली सरकार बनेगी।

**बिहार विधानसभा चुनाव 2005 के परिणाम**

| राजनीतिक दल | चुने गये सदस्यों की संख्या |
|---|---|
| भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस | 9 |
| भारतीय जनता पार्टी | 55 |
| जनता दल यूनाइटेड | 88 |
| राष्ट्रीय जनता दल | 54 |
| लोक जनशक्ति पार्टी | 10 |
| अन्य राजनीतिक दल | 17 |
| निर्दलीय | 10 |
| कुल योग | 243 |

दी गई तालिका में चुनाव परिणाम को ध्यान से देखें एवं समझाएँ कि क्या इस चुनाव में किसी भी दल को बहुमत प्राप्त हुआ? भारतीय जनता पार्टी एवं जनता दल यूनाइटेड ने एक साथ मिलकर चुनाव लड़ा था। इनके 143 विधायक होने के कारण इन्हें बहुमत मिल गया और वे सत्ताधारी पक्ष के सदस्य हो गये। अन्य सभी विधायक विरोधी पक्ष के सदस्य बन गए। इस चुनाव में राष्ट्रीय जनता दल मुख्य विरोधी दल बना, क्योंकि भारतीय जनता पार्टी एवं जनता दल यूनाइटेड गठबंधन के बाद सर्वाधिक विधायक इसी के थे। विरोधी पक्ष में अन्य पार्टियाँ भी थी और कुछ निर्दलीय उम्मीदवार भी जो चुनाव जीत कर आए थे। चुनाव के पश्चात् बहुमत प्राप्त करने वाला दल या गठबंधन अपने नेता का चयन करता है। इस चुनाव में भा.ज.पा. एवं ज.द.यू. गठबंधन के विधायकों ने श्री नीतीश कुमार को अपना नेता चुना और वे मुख्यमंत्री बनाए गए।

बिहार विधान सभा भवन

**राज्यपाल**

राज्य का पूरा प्रशासन राज्यपाल के नाम से ही चलाया जाता है। राज्यपाल राज्य प्रशासन के संवैधानिक प्रधान होते हैं। वह उस दल या गठबंधन के नेता को बुलाते हैं जिसे बहुमत प्राप्त हो। और उसी को मुख्यमंत्री नियुक्त करते हैं। राज्यपाल को मुख्यमंत्री एवं मंत्रिपरिषद की सलाह से कार्य करना होता है। राज्यपाल की नियुक्ति यह सुनिश्चित करने के लिए की जाती है कि राज्य सरकार संविधान के नियमों के अनुसार अपना कामकाज चलाए।

1. हिमाचल प्रदेश विधानसभा में ......68.....सदस्य हैं। किसी भी दल या गठबंधन को बहुमत प्राप्त करने के लिए कितने सदस्यों की आवश्यकता होगी? **?**

2. किसी दल या गठबंधन की सरकार बनेगी यह तय करने के लिए बहुमत के नियम से क्यों चलना चाहिए? चर्चा करें।
3. क्या कुछ ऐसे उदाहरण दे सकते हैं जहाँ आपको लगता है कि बहुमत के अनुसार निर्णय होना चाहिए? चर्चा करें।
4. अपने शिक्षक की सहायता से बिहार विधानसभा चुनाव के वर्ष 2010 में विभिन्न राजनीतिक दल के परिणाम की जानकारी प्राप्त कर तालिका के रूप में दर्शाइए:

| राजनीतिक दल | चुने गये सदस्यों की संख्या |
|---|---|
| भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस | |
| भारतीय जनता पार्टी | |
| जनता दल यूनाइटेड | |
| राष्ट्रीय जनता दल | |
| लोक जनशक्ति पार्टी | |
| अन्य राजनीतिक दल | |
| निर्दलीय | |
| कुल योग | 243 |

## fo/kku ifj"kn

भारत के प्रत्येक राज्य में विधान सभा है, परन्तु कुछ राज्यों यथा बिहार, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र एवं जम्मू व कश्मीर के विधान मंडल में द्वितीय सदन के रूप में विधान परिषद् है। इसे उच्च सदन भी कहा जाता है। यह एक स्थायी सभा है, जो कभी भंग नहीं होता है। प्रत्येक दो वर्षों के बाद एक तिहाई सदस्य सेवानिवृत हो जाते हैं और उनके स्थान पर पुनः निर्वाचन व मनोनयन होता है। विधान परिषद् के सदस्यों की समस्त संख्या उस राज्य के विधान सभा के कुल सदस्यों की संख्या के एक तिहाई से अधिक और किसी भी दशा में सदस्यों की संख्या 40 से कम नहीं होगी। विधान परिषद् के गठन में कुल निर्धारित सदस्यों के एक तिहाई सदस्य नगरपालिकाओं, जिला पार्षदों एवं स्थानीय निकायों के निर्वाचक मंडल द्वारा, एक तिहाई सदस्य राज्य के विधान सभा के सदस्यों द्वारा, 1/12 सदस्य स्नातकों के निर्वाचक मंडल द्वारा एवं 1/12 सदस्य माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा संस्थाओं में कार्यरत शिक्षकों के निर्वाचक मंडल द्वारा निर्वाचित किये जाते हैं। शेष 1/6 सदस्य राज्यपाल द्वारा मनोनीत किये जाते हैं जिन्हें साहित्य, कला, विज्ञान, सहकारिता आंदोलन तथा सामाजिक सेवा में विशेष ज्ञान या व्यावहारिक अनुभव होता है। विधान परिषद् की कार्यवाही को संचालित करने के लिए सदस्य अपने में से एक सभापति एवं एक उप सभापति का चुनाव करते है।

झारखंड के अलग राज्य बनने के बाद बिहार विधान परिषद् में कुल 75 सीट है। इनमें स्थानीय निकाय द्वारा 24, विधान सभा सदस्यों द्वारा 27, स्नातकों द्वारा 6 एवं शिक्षकों द्वारा 6 निर्वाचित सदस्य है। शेष 12 सदस्य राज्यपाल द्वारा मनोनीत है।

## विधानसभा में एक बहस

सभी मंत्रियों के अलग-अलग कार्यालय होते हैं जहाँ वे सिर्फ अपने विभाग के कार्यों का संचालन करते हैं। उदाहरण के लिए स्वास्थ्य मंत्री सिर्फ स्वास्थ्य संबंधी कार्यों का संचालन एवं शिक्षा मंत्री (मानव संसाधन विकास मंत्री) सिर्फ शिक्षा संबंधी कार्यों को अपने विभाग में देखते हैं। उन पर पूरे राज्य के उस विभाग से संबंधित जिम्मेवारी होती है। सभी मंत्रियों को अपने विभाग से संबंधित प्रस्ताव विधानसभा में चर्चा के लिए रखनी होती है। इसके पश्चात् सदन के सदस्य उस पर अपनी स्वीकृति देते हैं जहाँ सभी दल के सदस्य महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करने के लिए इकÎs gksrs gSaA cgl djrs gSa ,oa leL;kvksa dk gy fudkyrs gSaA vkb;s! vc fo/kkulHkk dh cgl ij xkSj djsaA

विधानसभा की बहस में विधायक अपनी बात रख सकते हैं। संबंधित विषय पर प्रश्न पूछ सकते हैं एवं सुझाव दे सकते हैं। विभागीय मंत्री प्रश्नों के उत्तर देते हैं और सदन को आश्वस्त करते हैं कि आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं।

सरकार जो भी निर्णय लेती है उसे विधानसभा के सदस्यों द्वारा अनुमोदित करना होता है। हमलोग विधानसभा में किए गए बहस एवं प्रस्ताव को अखबारों, दूरदर्शन समाचार चैनलों अथवा रेडियो पर पढ़ते व सुनते हैं।

आदर्श मध्य विद्यालय सैदपुर के बच्चे परिभ्रमण के दौरान विधानसभा में बहस कैसे होती है, देखने के लिए अपने राज्य की राजधानी पटना गये। विधानसभा भवन अत्यन्त भव्य एवं आकर्षक है। मुख्य द्वार पर बड़े-बड़े अक्षरों में 'बिहार विधानसभा' लिखा हुआ था। बच्चे बहुत उत्सुक थे। सुरक्षा व्यवस्था देखते बन रही थी। आम आदमी हो या कोई विधायक सुरक्षा जाँच के बाद ही उन्हें अन्दर जाने दिया जाता था। सैदपुर के बच्चों को सुरक्षा जाँच के बाद ऊपर दर्शक दीर्घा में ले जाया गया। वहाँ से वे नीचे के विधानसभा हॉल को देख सकते थे। हॉल में डेस्कों की अनेक कतारें लगी थीं। प्रत्येक डेस्क पर माइक लगा हुआ था, जिस पर विधानसभा

सदस्य बैठे हुए थे। उनके सामने की कुर्सी पर विधानसभा अध्यक्ष बैठे हुए थे। बहस शुरू होती है –

**विधायक 1:** अध्यक्ष महोदय, जैसा कि हम सभी लोग जानते हैं सरकार की यह योजना है कि सभी पंचायत में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र हो, इसके बावजूद अधिकतर पंचायत में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र आज तक नहीं खुला, जिसके चलते कई लोग समय से इलाज नहीं करवा पाते एवं उनकी मृत्यु हो जाती है। मैं स्वास्थ्य मंत्री से यह जानना चाहती हूँ कि आखिर कब तक हमारे पंचायत के लोग इलाज के अभाव में मरते रहेंगे?

**विधायक 2:** अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न यह है कि एक तो हमारी पंचायतों में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का घोर अभाव है, और जहाँ स्वास्थ्य केन्द्र खुला भी तो डाक्टरों की कमी है, इन स्वास्थ्य केन्द्रों का इतना बुरा हाल क्यों? सरकार इन स्वास्थ्य केन्द्रों पर डॉक्टरों एवं चिकित्सा कर्मियों की नियुक्ति क्यों नहीं कर रही?

**विधायक 3:** महोदय, मेरे निर्वाचन क्षेत्र में अधिकतर सड़कों की दशा आज भी बदतर है। बहुत सारे गाँवों का सम्पर्क आज भी मुख्य सड़क से नहीं हो पाया है। आपकी सरकार यह दावा करती है कि हमने सड़कें बनवायी हैं। जबकि मेरे निर्वाचन क्षेत्र के अधिकतर गाँवों की स्थिति यह है कि व्यक्ति अगर बीमार पड़ जाए तो उन्हें शहर के स्वास्थ्य केन्द्र पर पहुँचते-पहुँचते 8-10 घंटे लग जाते हैं। अगर सड़क सही होती तो उनके गाँवों का सम्पर्क मुख्य सड़क से होता तब वे दो घंटे में शहर के स्वास्थ्य केन्द्र में आसानी से पहुँच सकते हैं। अतः मैं ग्रामीण विकास मंत्री का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहूँगा कि वे कब तक उन सड़कों को बनवा पाएँगे?

**मंत्री** : अध्यक्ष महोदय, मुझे लगता है कि माननीय सदस्य जनता को बढ़ा-चढ़ा कर बता रहे हैं। यह सत्य है कि सभी पंचायतों में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र नहीं खुल पाए हैं पर आशा कार्यकर्त्ता की नियुक्ति लगभग सभी गांवों में हो रही है। बड़े पैमाने पर नियत मानदेय पर चिकित्सकों की नियुक्ति की गई है। इतना ही नहीं सरकारी अस्पतालों में मुफ्त में सभी दवाओं का वितरण एवं टीके दिये जा रहे हैं। 24 घंटा डॉक्टर अस्पतालों में इलाज उपलब्ध करा रहे हैं। सरकार लोगों की मदद के लिए भरसक प्रयास कर रही है।

"अध्यक्ष महोदय, मुझे लगता है कि विरोधी पक्ष के सदस्य भी बिना कारण सरकार पर दोषारोपण कर रहे हैं। आज पूरे राज्य का शायद ही कोई गाँव, शहर या गली-मुहल्ला होगा, जिसकी सड़क का पक्कीकरण अभी तक नहीं हुआ है। आपके निर्वाचन क्षेत्र के सड़कों का भी टेंडर हो चुका है। इसलिए चिन्ता न करें, शीघ्र ही वे सड़कें भी बन जाएँगी।"

इस प्रकार हमने विधानसभा में चल रही बहस के विषय में जाना, यहाँ हमने देखा कि विधायकों ने अपने क्षेत्र की समस्या को विधानसभा में बहस के दौरान उठाया। विधायक अपने क्षेत्र का प्रतिनिधि होता है और उससे अपेक्षा की जाती है कि वह अपने क्षेत्र में दौरा करें, लोगों से मिलें एवं समस्याओं के समाधान के लिए प्रयास करें। इस बहस में मंत्री महोदय ने उन्हें आश्वस्त करने की कोशिश की। मंत्री के ऊपर पूरे राज्य की जिम्मेदारी होती है एवं जिस विभाग का वह मंत्री होता है उसकी जवाबदेही भी। मंत्री पूरी तरह से सरकार के काम के लिए उत्तरदायी होते हैं। सरकार का मतलब शासन के विभिन्न विभागों एवं मंत्रियों से होता है और यही कार्यपालिका कहलाता है। दूसरी तरफ सभी विधायक जो विधानसभा में एकत्र होते हैं, एवं कानून बनाते हैं। उसे **fo/kkf;dk** कहते हैं।

1. अगर आप विधायक होते तो अपने क्षेत्र की कौन सी समस्या उठाते और क्यों?
2. आपकी नजर में एक विधायक और उस विधायक में, जो मंत्री भी हैं क्या अंतर है?
3. विधानसभा में बहस करने की आवश्यकता क्यों है?

## सरकार की कार्यप्रणाली

विधानसभा की बहस के कुछ दिन बाद मुख्यमंत्री, स्वास्थ्य मंत्री एवं ग्रामीण विकास मंत्री के साथ विधायक द्वारा सदन में उठाये गए मामले पर विचार करने के लिए बैठक करते हैं। ग्रामीण विकास मंत्री के साथ उस विधायक के निर्वाचन क्षेत्र के दौरे पर जाने की योजना बनाते हैं जिनके क्षेत्र की सड़कों की स्थिति आज भी जर्जर है जबकि टेंडर तीन माह पहले हो गया है। अगले सप्ताह वे उन गांवों का दौरा करते हैं एवं विधायक द्वारा उठाये गए मामले को सही पाते हैं। दौरे से लौटने के पश्चात वे सबसे पहले उस ठेकेदार (संवेदक) का ठेका रद्द करते हैं एवं ग्रामीण विकास मंत्री को नए सिरे से टेंडर निकलवाने का आदेश देते हैं एवं तीन माह के अन्दर सड़कों की स्थिति ठीक करने की बात भी करते हैं। साथ ही एवं स्वास्थ्य मंत्री को निर्देश देते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में डॉक्टरों की उपस्थिति सुनिश्चित करें जिससे कि गांव के लोगों का इलाज हो पाए।

सचिवालय, पटना

इस प्रकार हमने जाना कि, वे लोग जो सरकार में शामिल हैं जैसे मुख्यमंत्री, स्वास्थ्य मंत्री, शिक्षा मंत्री, ग्रामीण विकास मंत्री इत्यादि। इन सभी को समस्याओं पर कार्रवाई करनी होती है। वे अपने कार्यों को विभिन्न विभागों जैसे स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग, पथ निर्माण विभाग, कृषि विभाग आदि द्वारा करवाते हैं। इन मंत्रियों को विधानसभा में उठाए गए प्रश्नों के उत्तर देना होता है एवं प्रश्नकर्त्ता को आश्वस्त करना होता है कि उचित कदम उठाए जा रहे हैं। साथ ही साथ इन विभागों के द्वारा जो भी कार्य किया जाता है, उसका बजट सदन द्वारा स्वीकृत करवाया जाता है। पुनः उस योजना की पूर्ति के लिए बजट में धन का प्रावधान कर अनुमोदन लिया जाता है।

सरकार के कार्य के बारे में टीका टिप्पणी और सरकार से कार्रवाई करने की माँग सिर्फ विधानसभा में ही नहीं की जाती, बल्कि हम लोग प्रतिदिन अखबारों, रेडियो, दूरदर्शन चैनलों एवं अन्य संगठनों को सरकार के बारे में बातें करते देखते हैं। लोकतंत्र में लोग अनेक माध्यमों द्वारा अपने विचार व्यक्त करते हैं और अपनी माँग रखते हैं

## अभ्यास

1. अपने शिक्षक की सहायता से पता लगाइये कि निम्नांकित सरकारी विभाग क्या काम करते हैं और उन्हें तालिका में दिए गए रिक्त स्थानों में भरिए

| विभाग का नाम | उनके द्वारा किए गए कार्यों के उदाहरण |
|---|---|
| शिक्षा विभाग | |
| स्वास्थ्य विभाग | |
| पथ निर्माण विभाग | |
| कृषि विभाग | |

2. निर्वाचन क्षेत्र व प्रतिनिधि शब्दों का प्रयोग करते हुए स्पष्ट कीजिए कि विधायक कौन होते हैं और उनका चुनाव किस प्रकार होता है?
3. विधानसभा सदस्य द्वारा विधायिका में किए गए कार्यों और शासकीय विभागों द्वारा किए गए कार्यों के बीच क्या अन्तर है?
4. आपके विचार में क्या विधानसभा में बहस कुछ अर्थों में उपयोगी रही? कैसे? चर्चा कीजिये

© BSTBPC WEBCOPY. NOT TO BE PUBLISHED

## अध्याय 3

# शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में सरकार की भूमिका

सड़क, बिजली, कानून व्यवस्था, आपस के साथ रहते लोगों का लोकतांत्रिक अधिकार है। इसलिए अपेक्षा होती है कि लोगों द्वारा चुनी हुई सरकार इसे पूरा करे। इस अध्याय में हम लोग शिक्षा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी सरकार की भूमिका को समझेंगे और देखेंगे कि यह सरकार के काम से किस प्रकार जुड़ी हुई है।

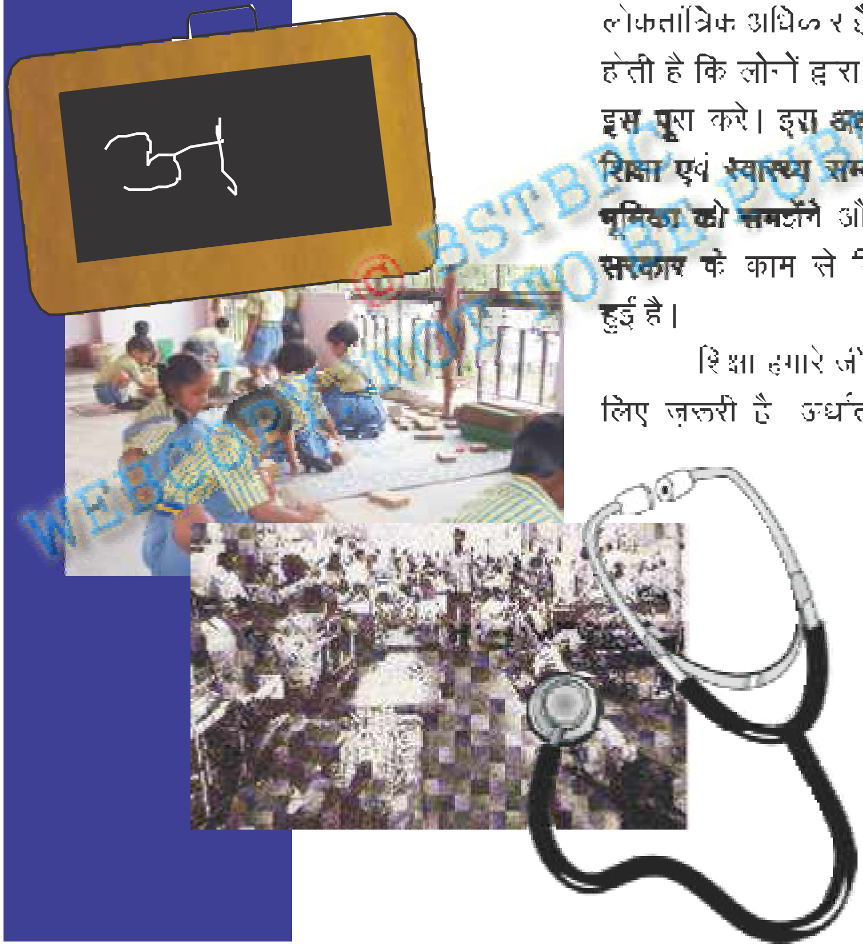


WEBCOPY © BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

शिक्षा हमारे जीवन के विकास के लिए ज़रूरी है अर्थात् यह दुनिया के

समझने का मौका देती है, आत्मविश्वास देती है और व्यक्ति व समाज को बेहतर बनाने की कोशिश करती है। शिक्षा इस बात के लिए सक्षम बनाती है कि हम अपनी रुचि के अनुसार काम ढूँढ़ पाएँ। समाज के लोग किसी समस्या पर मिल-जुल कर बातचीत कर सकें और उसका समाधान निकाल सकें। इसके अलावा एक शिक्षित व्यक्ति बाजार में अपना बचाव करने, बैंक से ऋण लेने, वैज्ञानिक ढंग से खेती करने, सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी लेने में ज़्यादा समर्थ होता है। वह राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने एवं सामाजिक कार्यों में सफलतापूर्वक भागीदारी करने में सक्षम महसूस करता है।

## बिहार में शिक्षा की स्थिति

स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही सरकार के लिए हमारे संविधान में एक लक्ष्य निर्धारित किया था कि दस वर्षों के अंदर 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों को शिक्षा उपलब्ध करायेगी। लेकिन लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकी है। आज इतने वर्षों बाद भी सभी लोगों तक शिक्षा नहीं पहुँची। यह हमारे लिए बहुत चिन्ता का विषय है। आइए, अपने राज्य के उदाहरण से इस स्थिति को समझें।

एक दृष्टि हम नीचे की तालिका पर डालते हैं, जो बिहार की साक्षरता दर से संबंधित है। साक्षरता दर यह बताती है कि कुल जनसंख्या में से कितने प्रतिशत लोग साक्षर हैं। यानि वैसे लोगों की कितनी संख्या है जो कम से कम अपना नाम लिख सकते हैं और कुछ सरल वाक्यों को पढ़ कर समझ सकते हैं।

**भारत की जनगणना 2001 के अनुसार**
**बिहार की साक्षरता की स्थिति**

| कुल साक्षरता दर (प्रतिशत में) | पुरुष साक्षरता दर (प्रतिशत में) | महिला साक्षरता दर (प्रतिशत में) | अनु. जाति साक्षरता दर (प्रतिशत में) | अनु. जनजाति साक्षरता दर (प्रतिशत में) |
|---|---|---|---|---|
| 47 | 60 | 33 | 29 | 28 |

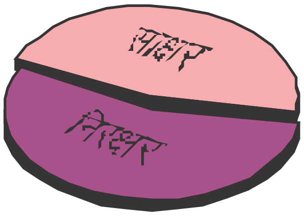


इस तालिका को देखने से यह पता चलता है कि अपने राज्य में शिक्षा की स्थिति अत्यंत दयनीय है। हमारी कुल साक्षरता दर आधी से भी कम है अर्थात् हमारे प्रदेश की कुल आबादी के आधे से ज़्यादा लोग पढ़े लिखे नहीं हैं। महिलाओं, अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों की स्थिति सबसे बदतर है। इनमें केवल एक तिहाई या (28.33 प्रतिशत) ही साक्षर हैं।

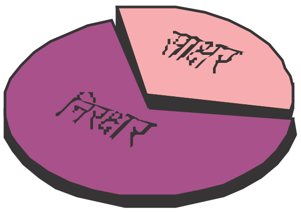


यह स्थिति इसलिए बनी हुई है क्योंकि स्कूल की व्यवस्था बहुत कमज़ोर है। बचपन में इन्हें स्कूल जाने का एवं पढ़ाई करने का मौका नहीं मिला। हाल के वर्षों में सरकार द्वारा किए गए प्रयासों के कारण साक्षरता दर में अप्रत्याशित वृद्धि देखने को मिली है फिर भी शत-प्रतिशत लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो पायी।

## बच्चों द्वारा बच्चों का सर्वे

आज भी बच्चें विद्यालय क्यों नहीं जा रहे या पढ़ाई नहीं कर पा रहे हैं इसके लिए एक सर्वे करते हैं।

4-4 बच्चों की टोली बनाकर नीचे दिए गए प्रश्नों पर कम से कम तीन बच्चों से बात करना है। इन बच्चों की परिस्थिति अलग-अलग है। यह पता करने की कोशिश करें कि किन कारणों के चलते ये बच्चे विद्यालय नहीं जा पा रहे।

(1) ऐसे बच्चे जो कभी स्कूल नहीं गये

वे कौन-कौन से कारण हैं जिनके चलते ये बच्चे कभी स्कूल नहीं गये?

1. ..........................................
2. ..........................................
3. ..........................................
4. ..........................................
5. ..........................................
6. ..........................................

(2) ऐसे बच्चे जो विद्यालय मे पढ़ते थे।

लेकिन उन्होंने बीच में ही जाना बंद कर दिया।

किन कारणों से ये बच्चे बीच में ही विद्यालय छोड़ दिए ?

1. ........................................
2. ........................................
3. ........................................
4. ........................................
5. ........................................
6. ........................................

(3) ऐसे बच्चे जो बाल मज़दूर हैं।

किन-किन कारणों से ये बच्चे पढ़ने की उम्र में मज़दूरी करने लगे हैं ?

1. ........................................
2. ........................................
3. ........................................
4. ........................................
5. ........................................
6. ........................................

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

(4) एक शैक्षणिक सर्वेक्षण कराएँ जो एक ही उम्र के सरकारी स्कूल, निजी स्कूल या और किसी अन्य प्रकार के स्कूल के बच्चों के बीच अन्तर करेंगे।

**शिक्षक के लिए :**

बच्चों द्वारा किये गए सर्वे को अध्यापक समूह कार्य के माध्यम से आंकड़ा एकत्रित कर उसका विश्लेषण करेंगे। बच्चों द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार क्या मुख्य कारण नज़र आ रहे हैं? इसके लिए क्या करना चाहिए? चर्चा करें।

## सरकार की भूमिका

शिक्षा प्राप्त करना हम सबका हक है। सबको शिक्षा उपलब्ध करवाना सरकार की जिम्मेदारी है। इस बात को पूरा करने के लिए यह जरूरी हो जाता है कि इसे कानून का स्वरूप

दिया जाए कि किसी को अगर शिक्षा उपलब्ध न हो तो वह न्यायालय का सहारा ले। इसके साथ-साथ शिक्षा के लिए बेहतर एवं उचित व्यवस्था करना ज़रूरी है। इस हेतु कई योजनाएँ शुरू की गई हैं जिससे यह लक्ष्य पूरा हो सके। इसके कुछ उदाहरण हम नीचे देखेंगे।

साइकिल से विद्यालय जाती लड़कियाँ

1 — अनुप्रिया, अंकिता, शालिनी, शबनम मध्य विद्यालय, नरकटहा में आठवीं वर्ग की छात्राएँ हैं। यह विद्यालय उनके घर से काफ़ी नज़दीक है। इस कारण विद्यालय आने-जाने में उन्हें कोई असुविधा नहीं होती है, पर एक बात उनके मन को हमेशा कचोटती है कि शायद वे आगे की पढ़ाई नहीं कर पायेंगी। क्योंकि उच्च विद्यालय की दूरी गाँव से लगभग 5 कि.मी. है। विद्यालय दूर होने के कारण गाँव की अधिकतर लड़कियाँ कक्षा आठ के बाद पढ़ाई नहीं कर पाती, क्योंकि उन्हें विद्यालय आने जाने में काफ़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। साथ ही उनके माता-पिता भी उनकी सुरक्षा को लेकर चिंतित रहते हैं। एक दिन अखबार के माध्यम से पता चला कि कक्षा नौ में पढ़ने वाली सभी लड़कियों को सरकार द्वारा साइकिल दी जायेगी। उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। अब इस गाँव की सभी लड़कियाँ आगे की पढ़ाई कर सकती हैं। अब सभी लड़कियाँ आगे पढ़ सकती हैं। कक्षा आठ में उत्तीर्ण होने के बाद सबके माता-पिता ने अपनी-अपनी लड़कियों का नामांकन उच्च विद्यालय में करवा दिया। कुछ ही दिनों बाद विद्यालय प्रधान ने कक्षा नौ में पढ़ने वाली सभी लड़कियों के बीच साइकिल वितरित करवा दी। साइकिल पाकर ये लड़कियाँ आत्मविश्वास से परिपूर्ण दिखती हैं एवं समूह में विद्यालय जाती हैं।

1. अनुप्रिया एवं उसकी सहेलियाँ क्यों परेशान थीं, उन सबकी परेशानी कैसे दूर हुई?
2. लड़कियों को शिक्षा ग्रहण करने में परेशानियों का सामना करना पड़ता है ऐसा क्यों? कारण सहित लिखें।
3. आपकी समझ में ऐसी क्या व्यवस्था हो सकती है जिससे लड़कियों को परेशानी न हो?

?

सुमित सरकारी विद्यालय में कक्षा पाँच का छात्र है। वह हमेशा खुश दिखता था पर इन दिनों चिंतित रहता है। उसकी चिंता का मुख्य कारण है किताबों का समय पर न मिलना। बाज़ार में भी उसकी पुस्तक नहीं बिकती, इसलिए चाहकर भी वह अपनी पुस्तक बाज़ार से खरीद नहीं पाया। सरकार की यह योजना है कि कक्षा एक से आठ तक के सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले सभी बच्चों को निःशुल्क पुस्तकें दी जाएँगी, ताकि सभी वर्ग के बच्चे विद्यालय आ पाएँ। पाँचवीं कक्षा में आए सुमित को तीन माह हो गये। अब उसे यह चिन्ता भी सता रही है कि परीक्षा में वह क्या लिखेगा? प्रधानाध्यापक से कहने पर वह स्थिति की जानकारी देते हैं एवं एक माह में पुस्तकें विद्यालय में पहुँच जाएँगी, ऐसा आश्वासन देते हैं।

1. सुमित की चिन्ता का क्या कारण है? यदि सुमित की जगह आप होते तो आपके मन में क्या-क्या विचार आते? आपस में चर्चा करें।
2. आपको समय पर किताब नहीं मिलने की स्थिति में प्रधानाध्यापक ने क्या प्रयास किया?
3. मध्याह्न भोजन योजना, पोशाक योजना, भवन निर्माण योजना, आँगनबाड़ी केन्द्र इत्यादि योजनाओं के विषय में शिक्षकों से चर्चा करें कि आखिर इनकी जरूरत क्यों है?
4. क्या आप अपने विद्यालय की पढ़ाई व्यवस्था से संतुष्ट हैं? अपने विचार लिखें।

?

## एक नज़र शिक्षा के अधिकार पर

शिक्षा का अधिकार 1 अप्रैल 2010 से पूरे देश में लागू हो गया। शिक्षा के अधिकार के तहत 6 से 14 आयु वर्ग के सभी बच्चों को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाएगी। किसी भी बच्चे को कक्षा में रोका नहीं जाएगा और न ही निष्कासित किया जाएगा, सभी बच्चों को स्कूल जाना अनिवार्य है। जिन बच्चों ने स्कूल छोड़ दिया है उन्हें मदद कर पुनः नामांकित किया जाएगा।

## स्वास्थ्य के क्षेत्र में सरकार की भूमिका

जिस तरह शिक्षा के क्षेत्र में सरकार की जिम्मेदारी है, उसी तरह स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी सरकार की जिम्मेदारी है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि देश में लोगों की स्वास्थ्य की दशा अच्छी नहीं है। पीने के लिए स्वच्छ पानी की कमी, संतुलित आहार की कमी, दवाइयों की कमी, अस्पताल में अपर्याप्त बिस्तर, डॉक्टर की कमी आदि अनेक समस्याएँ हैं

हमारे देश के संविधान के अनुसार सबको स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करना सरकार का प्राथमिक कर्त्तव्य है। नागरिकों को आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध होनी चाहिए, जिसमें आकस्मिक इलाज की सुविधा भी सम्मिलित हो। स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान करने वाली संस्थाएँ जैसे कि गाँव का स्वास्थ्य केंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, जिला अस्पताल आदि से अपेक्षा है कि वे सुचारू रूप से काम करें। गौरतलब है कि 2006 में रोगियों की औसत उपस्थिति प्रति स्वास्थ्य केन्द्र 39 थी। यह 2010 में बढ़ कर 4000 रोगी प्रतिमाह हो गयी है।

WEBCOPY, RESTRICTED, NOT TO BE PUBLISHED

- हमारे देश में प्रत्येक 1000 पैदा होने वाले बच्चों में से 300 बच्चों का वजन बहुत कम होता है। पाँच वर्ष के अंदर इनमें से 143 बच्चों की मृत्यु हो जाती है। ये बच्चे बचाये जा सकते हैं।

- हमारे देश में औरतों को सबसे ज्यादा खतरा बच्चे को जन्म देने के समय होता है। 1,00,000 औरतों में से 400 औरतों की बच्चे के जन्म देते समय मौत हो जाती है। ये औरतें मरने से बचायी जा सकती हैं।

1. यह दोनों स्थितियाँ क्यों उत्पन्न होती हैं? इसके पीछे क्या-क्या कारण हैं?
2. इन दोनों स्थितियों में बच्चों और औरतों को कैसे बचाया जा सकता है?

?

समानता के आधार पर किसी समाज को खड़ा करने के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य महत्वपूर्ण है। हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि इसकी व्यवस्था बेहतर बने और समान रूप से सभी को उपलब्ध हो। इसके लिए योजना बनाने और उन्हें व्यवस्थित रूप से लागू करने में सरकार और समाज दोनों की साझी पहल आवश्यक है।

## अभ्यास

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

1. सबके लिए स्वास्थ्य की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए सरकार कौन-कौन से कदम उठा सकती है? चर्चा करें।
2. शिक्षा की स्थिति बेहतर करने के लिए सरकार की क्या भूमिका होनी चाहिए?
3. सर्वे क्यों किया जाता है? आपने इस पाठ में किए गए सर्वे से क्या समझा?
4. एक ही उम्र के बच्चे जो सरकारी स्कूल, निजी स्कूल या अन्य किसी स्कूल में पढ़ते हैं उनसे बातचीत करके पता करें कि इन स्कूलों में क्या समानता एवं अन्तर है।

## अध्याय 4

# समाज में लिंग भेद

आमतौर पर हमारी पहचान स्त्री और पुरुष के रूप में होती है। स्त्री और पुरुष के रूप में समाज में हमारी भूमिका कैसे तय होती है? क्या उसमें बदलाव की जरूरत है? इस पाठ में हम इन प्रश्नों पर चर्चा करेंगे

नीचे दिए वाक्यों में आप अपनी समझ के अनुसार 'लड़का', 'लड़की' या लड़का-लड़की दोनों भरें...

**कुछ लोग कहते हैं,**

जिसके लम्बे बाल हों, वह ........................ है।

जो पेड़ पर चढ़ जाए, वह ........................ है।

जो जेवर पहने, वह ........................ है।

जो ताकतवर है, वह ........................ है

जो शर्माए, वह ........................ है।

जो हाट बाजार जाए, वह ........................ है।

जो फुटबॉल खेले, वह ........................ है

जो घर का काम करे, वह ........................ है।

जो खेतों में काम करे, वह ........................ है।

जो नर्सिंग का काम करे, वह ........................ है।

जो कुश्ती लड़े, वह ........................ है।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

## लड़की क्या है ? लड़का क्या है ?

बच्चा जब पैदा होता है तो वह
लड़की होती है या लड़का
लड़की क्या होती है ?
कुछ लोग कहते हैं जिसके लम्बे बाल हों
वह लड़की है।
समीर के बाल लम्बे हैं
पर वह तो लड़का है
कुछ लोग कहते हैं जो जेवर पहने वह
लड़की है
मदन माला पहनता है और
कानों में बाली भी पहनता है
और वह लड़का है।

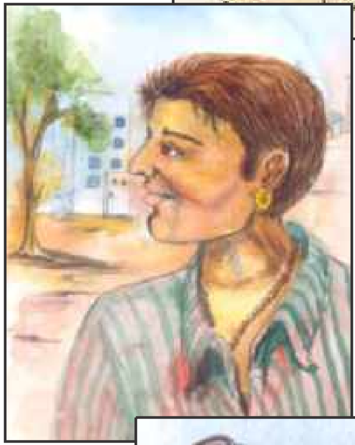

लड़का क्या होता है ?
कुछ लोग कहते हैं जो नेकर (हाफ पैन्ट)
पहने और पेड़ों पर चढ़ जाए
वह लड़का है।
शांति नेकर पहनती है, झट पेड़ पर
चढ़ जाती है और वह तो लड़की है।
कुछ लोग कहते हैं जो ताकतवर हो
और भारी बोझ उठा पाये वह लड़का है
सईदा और नफीसा दो दो मटके या
लकड़ी के गट्ठर उठाती हैं
वह लड़की है।

साभार : लड़की क्या है लड़का क्या है ?
: कमला भसीन, जागोरी द्वारा प्रकाशित पुस्तिका

## नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें

- अगर किसी लड़की के बाल छोटे हों, तो क्या आप मजाक उड़ाते हैं?
- कोई लड़का माला या कान में बाली पहनता है, तो क्या वह लड़कियों जैसा हो जाता है?
- परिवार में लड़कियों द्वारा किए जाने वाले कार्यों की सूची बनाएं। इनमें से कौन से कार्य हैं, जो लड़के नहीं कर सकते और क्यों?
- क्या लड़कियाँ लड़कों के समान मैदान में खेलने जाती हैं? अगर नहीं, तो क्यों नहीं जाती हैं?
- अगर आप लड़की हैं, तो क्या बड़ी होकर पुलिस बल में काम करना पसन्द करेंगी, और अगर आप लड़का हैं, तो क्या नर्सिंग की ट्रेनिंग लेना पसन्द करेंगे? हाँ तो क्यों और नहीं तो क्यों नहीं?

लिंग मनुष्य की जैविक संरचना है। प्रजनन अंग यह निर्धारित करते हैं कि हम स्त्री हैं या पुरुष। बच्चों को जन्म देने एवं स्तनपान जैसे कार्य महिलाओं के विशिष्ट एवं प्राकृतिक गुण होते हैं। यह फर्क जैविक संरचना के कारण होता है। अक्सर लोग 'जेंडर' का अर्थ लिंग यानी स्त्रीलिंग व पुँल्लिंग के लिए करते हैं। यह एक गलत धारणा है। 'जेंडर' हमारे सामाजिक व्यवहार को दर्शाता है। सामाजिक रूप से यह तय होता है कि महिला एवं पुरुष को क्या पहनना चाहिए, क्या काम करना चाहिए, कैसे व्यवहार करना चाहिए आदि। ये सभी लिंग भेद, 'जेंडर' या सामाजिक लिंग कहलाते हैं। समय के साथ-साथ समाज बदलता है। इस तरह सामाजिक लिंग की परिभाषा भी बदलती है।

मैं लड़की हूँ, और मैं क्रिकेट खेलती हूँ।

मैं लड़का हूँ, और मुझे स्वेटर बुनना बहुत पसन्द है।

**हमें इससे कोई परेशानी नहीं तो फिर समाज परेशान क्यों ???**

जैसे-कई वर्ष पूर्व लड़कियों को स्कूल नहीं जाने दिया जाता था। लेकिन अब इस गाँव में कुछ परिवर्तन आया है।

## लड़के और लड़कियों का विकास

### परिस्थिति–1 : जावेद और शबाना का बड़ा होना

खुर्शीद और उनकी पत्नी रेशमा दोनों सरकारी कर्मचारी हैं। उनके दो बच्चे हैं, शबाना और जावेद। शबाना सातवीं कक्षा की छात्रा है, और जावेद आठवीं कक्षा का छात्र। सुबह उठकर परिवार के सारे लोग एक नियमित दिनचर्या के अनुसार अपने-अपने कामों में लग जाते हैं। चाय पीने के बाद खुर्शीद घर की सफाई करते हैं, रेशमा रसोईघर का काम संभालती है। बच्चे सारे कमरों के बिस्तर ठीक कर पढ़ने बैठ जाते हैं। नाश्ता करने के बाद शबाना और जावेद अपने अलावा माँ और पिता के लिए भी लंच बॉक्स तैयार करते हैं। शाम को विद्यालय से लौटने के बाद दोनों हाफ पैंट और टी-शर्ट पहन कर क्रिकेट खेलने नजदीक के मैदान में चले जाते हैं। दोनों अपने स्कूल की क्रिकेट टीम के सदस्य हैं। जावेद लड़कों की टीम का सदस्य है और शबाना लड़कियों की टीम की कप्तान है। दोनों बड़े होकर देश के लिए खेलना चाहते हैं। इस सपने को पूरा करने के लिए इनके माता-पिता पूरी तरह से इन्हें सहयोग करते हैं।

### परिस्थिति–2 : श्यामा की कथा

श्यामा समझ नहीं पाती कि ऐसा क्यों होता है? वह सुबह से उठकर ढेर सारा काम अकेले ही करती है। गाय लेकर जंगल में जाती है। किसी को कोई परेशानी नहीं होती है। वह भी अपने भाई रवि की तरह स्कूल जाना चाहती है। माँ, पिताजी, दादा सब यही कहते हैं, "इतनी दूर लड़की जाति को पढ़ने नहीं भेजेंगे।" बस पाँचवीं तक गाँव के स्कूल में पढ़ा लिया इतना बहुत है। पता नहीं ऐसा क्यों होता है। उसे याद है, चाची जब चटनी के लिए आम मंगाती तो वह दौड़कर जाती और झट से तोड़कर ले आती। गाँव के मास्टर जी कहते, "ये तो हिरणी है।" पर उसे एक बार भी दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेने नहीं दिया गया। कोई पूछता है, तो पिताजी यही कह देते कि गाँव में मध्य विद्यालय नहीं रहने के कारण उसे नहीं पढ़ा रहे हैं जबकि श्यामा को पता है कि वह यह सोचते हैं कि पढ़-लिखकर भी तो यह चूल्हा ही फूँकेगी। अब तो पिताजी श्यामा की अम्मा से एक दिन उसके ब्याह करने की बात कर रहे थे

## परिस्थिति 3 : गोविन्द का बड़ा होना

रूपपुर गाँव में गोविन्द नाम का एक 13 वर्षीय लड़का है। वह आठवीं कक्षा में पढ़ता है। उसके माता पिता मजदूरी करते हैं। उसके दो छोटे भाई बहन है। दिनभर खेतों में मजदूरी के कारण उसकी माँ थक जाती है। इस कारण कभी कभी वह घर का काम नहीं कर पाती। उसके माता-पिता में झगड़ा भी हो जाता है। इस झगड़े में कभी माँ की पिटाई भी हो जाती है। गोविन्द को यह अच्छा नहीं लगता। वह माँ की मदद करने के लिए घर के कई काम करता है जैसे– जलावन की लकड़ी लाना, पानी भरना, बरतन साफ करना, झाडू लगाना। माँ के घर लौटने के पहले वह सब्जी बना कर भी रख लेता है। घर के काम के कारण वह कभी-कभी दोस्तों के साथ खेलने भी नहीं जा पाता है। इस कारण उसके दोस्त भी उसे चिढ़ाते हैं। वह सोचता है क्या लड़कों का घर का काम करना ठीक नहीं है?

ऊपर के तीनों उदाहरणों को पढ़ने के बाद लगता है कि हम अलग अलग तरीके से स्याने होते हैं और हमारे बड़े होने के ढंग में भी फर्क हो सकता है। इसी प्रकार जब हम अपने माता पिता या बड़े बुजुर्गों से बात करें, तो पाएँगे कि उनके बचपन और हमारे बचपन में भिन्नता है अर्थात् उनके बड़े होने के तरीकों में अन्तर हो सकता है। बड़े होने के अनुभवों के पीछे कई सामाजिक धारणाएँ हैं, जिन पर हमें विचार करना चाहिए।

1. अगर आप श्याम की जगह पर होते तो क्या करते ?
2. श्याम के परिवार की सोच का श्याम के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ?
3. शबाना, जावेद, श्याम और गोविन्द के जीवन में किस तरह का फर्क है ?
4. गोविन्द के दोस्त उसे क्यों चिढ़ाते हैं ? क्या उनका चिढ़ाना उचित है ?
5. आप गोविन्द के दोस्त होते तो क्या करते ?

?

8. नीचे दिए गए परिस्थितियों के आधार पर आप किस रूप में बड़ा होना पसन्द करेंगे और क्यों?

## कैसे तय होती है, हमारी भूमिका

जैसे कि पहले ही चर्चा हो चुकी है कि सामाजिक लिंग से हमारे जीवन की कई बातें तय होती हैं आओ देखें ये कैसे होता है।

सूची बनाइए—

| लड़कियों द्वारा पहने जाने वाले कपड़े | लड़कों द्वारा पहने जाने वाले कपड़े |
|---|---|
| | |
| | |
| | |
| | |

| लड़कियों के खेलने के सामान | लड़कों के खेलने के सामान |
|---|---|
| | |
| | |
| | |
| | |

1. लड़के एवं लड़कियों के पहनावे और खेलों में फर्क क्यों है? चर्चा करें।

इस सूची से स्पष्ट होता है कि समाज लड़कों और लड़कियों में अन्तर करता है। यह अन्तर उनके पहनने के कपड़े और खेलने वाले खिलौनों में भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए उन्हें खेलने के लिए भिन्न-भिन्न खिलौने दिए जाते हैं। आपने गौर किया होगा कि लड़कों को अक्सर खेलने के लिए कारें दी जाती हैं, और लड़कियों को गुड़िया। बचपन में इन 'खिलौनों' को देने का भी एक मतलब होता है। ये खिलौने इस बात को दर्शाने के माध्यम होते हैं कि बड़े होकर वे जब स्त्री या पुरुष होंगे तो उनका जीने का तरीका अलग-अलग होगा।

बचपन से लड़के-लड़कियाँ समाज द्वारा तय की गई पुरुष व स्त्री की भूमिकाओं को सहज रूप से ग्रहण कर लेते हैं। धीरे-धीरे वे सोचने लगते हैं कि यह तो उनके प्राकृतिक गुण हैं, जीवन भी उसी आधार पर जीना चाहिए। अगर गहराई से विचार करें तो यह अन्तर प्रायः प्रतिदिन की छोटी-छोटी बातों में दिखने लगता है। लड़कियों को कैसे कपड़े पहनने चाहिए, लड़के को रोबदार आवाज में बात करनी चाहिए आदि, ये सब बताने भर के तरीके हैं कि जब वे बड़े होकर स्त्री या पुरुष बनेंगे तो उनकी विशिष्ट भूमिकाएँ होंगी। बाद के जीवन में ये सारी चीजें तय करती हैं कि आप कौन से विषय पढ़ेंगे? आपके व्यवसाय क्या होंगे? आपके जीने के तरीके क्या होंगे? यह सब सामाजिक रूप से तय होता है।

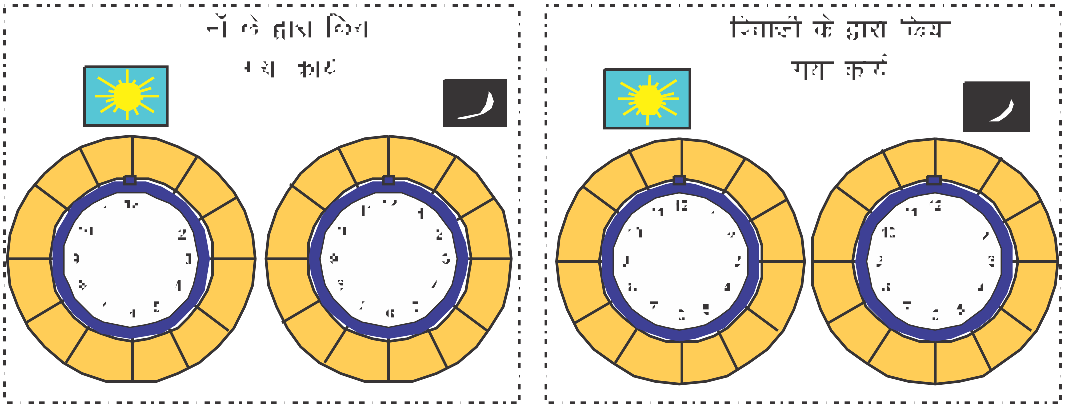


ऊपर दी गई घड़ियों के चित्र के बाहर उठने से लेकर सोने तक की दिनचर्या दर्शाएं।

1. आपके घर के ज़्यादातर काम कौन करता है? और क्यों?

## घरेलू कार्य का मूल्य

दूसरे समाजों की तरह अपने समाज में भी पुरुषों और स्त्रियों की भूमिकाओं और उनके काम के महत्व को समान नहीं समझा जाता है। पुरुषों और स्त्रियों का दर्जा एक जैसा नहीं होता। आइए देखते हैं कि पुरुषों और स्त्रियों के द्वारा किए जाने वाले कामों में यह असमानता कैसे है ?

### केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन के आँकड़ें

| राज्य | वेतन के साथ काम | वेतन के साथ काम | बिना वेतन के काम | बिना वेतन के काम | काम के कुल घंटे | काम के कुल घंटे |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष |
| | काम के घंटे (प्रति सप्ताह) | काम के घंटे (प्रति सप्ताह) | काम के घंटे (प्रति सप्ताह) | काम के घंटे (प्रति सप्ताह) | काम के घंटे (प्रति सप्ताह) | काम के घंटे (प्रति सप्ताह) |
| हरियाणा | 23 | 38 | 30 | 2 | 53 | 40 |
| तमिलनाडु | 19 | 40 | 35 | 4 | 54 | 44 |

ऊपर के आँकड़े और उनके उतार पर गौर करने पर पता चलता है कि अधिकांश महिलाएँ पुरुषों से ज्यादा काम करती हैं। पर वास्तविकता यह है कि इतना काम करने के बावजूद हम यह सोचते हैं कि घरेलू काम भी क्या कोई काम है? घर के काम की मुख्य जिम्मेदारी स्त्रियों की होती है जैसे– घर की देखभाल संबंधी कार्य, परिवार का ध्यान रखना– विशेषकर बच्चों, बुजुर्गों और बीमारों का। फिर भी जो काम घर के अन्दर किया जाता है, उसे काम के रूप में पहचान नहीं मिलती। इसे ऐसा समझ लिया जाता है कि ये तो औरतों के ही काम हैं। इसके लिए किसी को कोई खर्च नहीं करना पड़ता इसलिए समाज में इन कामों को अधिक महत्व नहीं दिया जाता है। इस सोच के चलते महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कमतर माना जाता है।

## क्या इन कामों का कोई मूल्य नहीं?

बहुत से घरों में विशेषकर शहरों और नगरों में लोगों को घरेलू काम के लिए रखा जाता है। वे बहुत सारे काम करते हैं जैसे झाड़ू-पोंछा करना, कपड़े और बर्तन धोना, खाना पकाना, छोटे छोटे बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल करना आदि। इनमें ज़्यादातर घरेलू कामगार औरतें होती हैं। कभी कभी इन कार्यों के लिए छोटे लड़के और लड़कियों को भी रखा जाता है। घरेलू कामों को ज़्यादा महत्त्व नहीं दिया जाता इसलिए इन कामों के बदले जो मजदूरी दी जाती है, वह भी सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम मज़दूरी से काफी कम होती है। एक घरेलू कामगार का काम सुबह पाँच बजे से शुरू होता है और देर रात तक चलता रहता है। इतनी जी-तोड़ मेहनत करने के बावजूद उनके साथ सम्मानजनक व्यवहार नहीं किया जाता है। वास्तव में जिसे हम घरेलू काम कहते हैं, वह कोई एक नहीं बल्कि कई कामों का मिश्रण होता है – झाड़ू लगाना, कपड़े साफ करना, फर्श साफ करना, खाना पकाना इत्यादि।

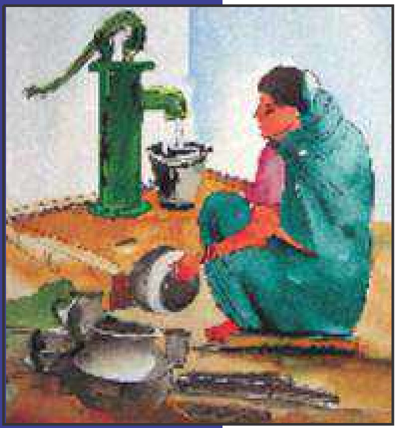

ग्रामीण इलाकों में इन कामों के अलावा महिलाएँ दूर से पीने का पानी, जलावन के लिए लकड़ियाँ भी लाती हैं व पशुओं की देखभाल तथा खेतों में काम आदि भी करती हैं। ये ऐसे काम हैं, जिनमें काफी शारीरिक श्रम की आवश्यकता होती है। ये काम शरीर को थकाने वाले होते हैं, जिसे अक्सर नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है।

सामाजिक लिंगभेद अर्थात् स्त्री और पुरुष में फर्क समाज में बहुत गहरा प्रभाव छोड़ता है। यही कारण है कि लड़कियाँ शिक्षा से वंचित रह जाती हैं। उनके स्वास्थ्य पर भी ध्यान नहीं दिया जाता। इस कारण स्त्रियों में खून की कमी एवं कमजोरी का पाया जाना एक आम बात है। एक तरफ काम का बोझ अधिक है, तो दूसरी तरफ मौके कम मिलते हैं, ध्यान भी कम दिया जाता है। इस तरह से देखें तो दोनों ओर से असमानताएँ हैं। आगे के पाठ में हम चर्चा करेंगे कि इस सामाजिक असमानता की स्थिति को बदलने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है।

## अभ्यास

1. सामान्यतः किसी घर में इन कार्यों का लड़कों या लड़कियों कौन करता है।
   - (क) मेहमान के लिए एक गिलास पानी लाना।
   - (ख) माँ के बीमार होने पर डॉक्टर को बुलाना।
   - (ग) घर के खिड़की दरवाजे की सफाई करना।
   - (घ) पिता जी की मोटर साइकिल साफ करने में मदद करना।
   - (ङ) बाजार से चीनी खरीदना।
   - (च) किसी आगंतुक के आने पर दरवाजा खोलना।
2. आपके परिवार व आस-पड़ोस में क्या लड़कियों और लड़कों में भेद होता है? आपकी समझ से यह भेद किस प्रकार का होता है?
3. महिलाओं की तुलना में पुरुषों का काम, क्या ज्यादा मूल्यवान होता है? अगर नहीं तो क्यों?
4. घरेलू मजदूरी करने वाली महिलाओं से बातचीत कर उनके कार्यों का विवरण, काम के घंटे, समस्याएँ एवं मजदूरी आदि की सूची तैयार करें
5. अगर आपकी माँ घर का काम दो दिनों के लिए आपको सौंप दे, तो उन कार्यों को करने में क्या समस्याएँ उत्पन्न हो सकती है?

# अध्याय 5

# समानता के लिए महिला संघर्ष

## कौन क्या काम करता है?

निम्नलिखित काम करने वालों के चित्र बनाइए:—

खेती का काम,

पढ़ाने-लिखाने का काम,

अस्पताल में मरीजों की देखभाल,

दुकान चलाना

वैज्ञानिक

ईंट भट्ठे पर काम करना

अपनी कक्षा द्वारा बनाये गये चित्रों को देखकर गिनें एवं अलग-अलग लोगों की संख्या दी गई तालिका में दर्शाएँ।

(शिक्षक द्वारा ब्लैक बोर्ड पर तालिका बनायी जाए।)

©BSTBPC WEBCOPY. NOT TO BE PUBLISHED



SOL www.ebsol.in

| काम | पुरुष | महिला |
|---|---|---|
| खेती का काम | | |
| पढ़ाने-लिखाने का काम | | |
| अस्पताल में मरीजों की देखभाल | | |
| वैज्ञानिक | | |
| दुकान चलाना | | |
| ईंट भट्ठे पर काम करना | | |
| कुल | | |

1. तालिका देखकर बताएँ कि किन कामों के लिए महिलाओं के चित्र ज्यादा संख्या में हैं और किन कामों के लिए पुरुषों के।
2. ऊपर दिए गए कामों के अलावा ऐसे कौन से काम हैं, जो महिलाएँ पुरुषों की तुलना में ज़्यादा करती हैं और कौन से काम महिला की तुलना में पुरुष ज़्यादा करते हैं? ऐसे 5-6 उदाहरण दें।

## क्या महिलाएँ योग्य नहीं?

रीता मैडम की कक्षा में तीस बच्चे हैं। उन्होंने अपनी कक्षा में इसी तरह का अभ्यास कराया और परिणाम इस प्रकार रहे –

| काम | पुरुष चित्र | महिला चित्र |
|---|---|---|
| खेती का काम (किसान) | 30 | 0 |
| शिक्षक | 18 | 12 |
| नर्स | 0 | 30 |
| वैज्ञानिक | 25 | 5 |
| दुकानदार | 30 | 0 |
| ईंट भट्ठे पर काम करना | 25 | 5 |
| कुल | | |

बच्चों ने चित्रों को अपनी समझ के आधार पर बनाया है जिसमें शिक्षक के रूप में पुरुषों को, किसान के रूप में भी पुरुषों को, नर्स के रूप में महिलाओं को एवं वैज्ञानिक के रूप में पुरुषों को, दर्शाया। ऐसा उन्हें इसलिए लगता है कि कुछ विशेष कार्य पुरुष ही कर सकते हैं, और कुछ खास तरह के कार्य महिलाएँ ही कर सकती है।

उदाहरण के लिए बहुत से लोग यह मानते हैं कि महिलाएँ ही अच्छी तरह से नर्स का काम कर सकती हैं क्योंकि वे अधिक सहनशील और विनम्र होती हैं। इस कार्य को महिलाओं द्वारा किए जाने वाले घरेलू कार्य के साथ जोड़कर देखा जाता है। इसी प्रकार यह धारणा बन गई है कि लड़कियाँ और महिलाएँ तकनीकी कार्य करने मे सक्षम नहीं होती है।

किरण बेदी, भारतीय पुलिस सेवा में प्रथम महिला

लोग इसी प्रकार की धारणाओं में विश्वास करते हैं। इसलिए बहुत-सी लड़कियों को उनकी क्षमता के अनुरूप अध्ययन करने और प्रशिक्षण लेने का मौका नहीं मिलता है। योग्यता होते हुए भी अधिकांश लड़कियों को स्कूली शिक्षा के बाद विवाह के लिए प्रेरित किया जाता है

© BSTBPC REFCOPY : NOT TO BE PUBLISHED

Navy inducts women pilots

हम मान लेते हैं कि महिलाओं एवं पुरुषों के काम करने की योग्यताएँ अलग-अलग हैं। यह फर्क केवल लड़का या लड़की होने से नहीं आता । यह इन बातों से तय होता है कि हम उनके काम के बारे में कैसे सोचते हैं? उन्हें कैसे मौके मिलते हैं तथा कौन किस काम के लिए कितना योग्य है?

आपके ख्याल से वे काम जिन्हें आमतौर पर पुरुष करते हैं, क्या महिला नहीं कर सकती है? और जो काम आमतौर पर महिलाएँ करती हैं, क्या पुरुष नहीं कर सकते? चर्चा करें। ऐसा बंटवारा क्यों है? इसका उनके जीवन पर किस तरह का प्रभाव पड़ता है?

## परिवर्तन के लिए जुनून

### 1. गुड़िया

पढ़ाई का जुनून क्या होता है, इसे साबित किया मो0 अमीन इदरीसी की 6 संतानों में सबसे छोटी बेटी गुड़िया ने। उसने देखा कि उसके माता पिता उसकी पढ़ाई के लिए राजी नहीं हैं। एक दिन वह माता-पिता को घर में बंद कर 13 किमी0 पैदल भागकर उत्प्रेरण केन्द्र नोखा रोहतास चली गयी। उसने वहां अपना नामांकन करा लिया। यह केन्द्र लड़कियों के लिए आवासीय विद्यालय है। इसके इस कदम की सूचना उसके माँ-बाप को 2 दिनों बाद मिली। सूचना मिलने पर उसके पिता, जो पेशे से ड्राइवर हैं, उत्प्रेरण केन्द्र पहुँचे। उन्होंने गुड़िया को वहाँ से वापस घर ले आना चाहा किन्तु गुड़िया वहाँ से नहीं आना चाहती थी। उसके पिता को अपने समाज की बंदिशों की चिंता थी। किन्तु गुड़िया की जिद्द के आगे उनकी एक न चली। इस तरह गुड़िया के इस कदम से, आस पास के गाँव में, शिक्षा के प्रति लोगों में एक नए उत्साह का संचार हुआ है।

भारत में 83 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएँ खेतों में काम करती हैं। उनके काम में पौधे रोपना, खर-पतवार निकालना, फसल काटना और कटाई करना शामिल हैं फिर भी जब हम किसान के बारे में बात करते हैं तो हमेशा एक पुरुष के बारे में ही सोचते हैं, ऐसा क्यों?

शिक्षक के साथ चर्चा करें।

## 2. पूजा

पूर्णिया जिले के एक गाँव की एक छोटी-सी बच्ची है—पूजा। अपने गाँव की हमउम्र लड़कियों को विद्यालय जाते देख उसे भी पढ़ने की इच्छा हुई। घर का सारा काम निपटाकर पूजा चोरी छिपे एक वर्ष तक लगातार मध्य विद्यालय जाती रही। पूजा ने पुलिस में कार्यरत अपने पिता को समझाने की कोशिश की। अन्ततः पिताजी मान गए। और उसका नाम विद्यालय में लिखवा दिया

## 3. शाहुबनाथ

शाहुबनाथ 45 साल की एक महिला है। वह पूरे आत्मविश्वास से केरल राज्य परिवहन की एक यात्री बस चलाती है। शाहुबनाथ को गाड़ी चलाने का शौक तो बचपन में ही था. लेकिन उसने कभी नहीं सोचा था कि किसी दिन वह यात्रियों से लदी हुई इतनी भारी भरकम बस चला पाएगी। फिर यह सब हुआ कैसे?

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

मैसूर की के०निनगम्मा भारत की प्रथम महिला बस ड्राइवर

जितना मुश्किल है बस चलाना, उससे कहीं ज्यादा मुश्किल है अधिकारियों को यह यकीन दिलाना कि मैं यह काम भी कर सकती हूँ। कई यात्री तो टिकट खरीदने के बाद भी चालक की सीट पर शाहुबनाथ को बैठे देखकर उतर जाते थे। शाहुबनाथ ने बताया "एक बार मेरी बस में सिर्फ एक यात्री ने सफर किया। सारे यात्री मुझे देखते ही उतर गए थे। उस दिन मैं बस चलाते-चलाते रोई भी थी। रात का सफर था। दूसरे दिन घर आई तो फूट-फूटकर रोने लगी। बिल्कुल बच्चों की तरह। मेरे पति भी रोने लगे थे। दोनों खूब रोए थे। मैंने कहा, 'मैं नहीं करूँगी अब यह काम।' पति ने कहा ठीक है, "अगर इतनी तकलीफ है तो छोड़ दो, पर मेरी तो इच्छा है तुम वही करो जो आमतौर पर लोग नहीं किया करते।"

मैं वापस ड्यूटी पर गई। धीरे धीरे यात्रियों ने मेरी ड्राइविंग की प्रशंसा की। फिर चार से आठ, आठ से सोलह बसें भी हुईं। अब मैं पूरे आत्मविश्वास के साथ बस चलाती हूँ।

1. गुड़िया और पूजा क्या चाहती थीं और इसे पूरा करने के लिए क्या किया?
2. अपने आस-पास की कुछ महिलाओं से बात कर के उनके अनुभव लिखो– उन्होंने स्कूल की पढ़ाई कहाँ तक की, किन समस्याओं का सामना करना पड़ा और किस तरह का प्रोत्साहन मिला आदि।
3. इन्दुबनाथ के बस चालक बनने के लिए कठिनाइयाँ क्यों आईं? शिक्षक के साथ चर्चा करें।

?

## महिलाओं के आंदोलन

ऐसे कई क्षेत्र हैं जहाँ महिलाओं की स्थिति में कुछ सुधार दिखता है जैसे कि स्कूली शिक्षा, साक्षरता, वोट देने का अधिकार, कानूनी हक एवं स्वास्थ्य सेवाएँ। यह सुधार काफी हद तक महिलाओं द्वारा आंदोलन छेड़ने की बदौलत हो पाया है।

महिलाओं ने व्यक्तिगत स्तर एवं जन समूह बनाकर इन परिवर्तनों के लिए संघर्ष किया है। विभिन्न तरह के आंदोलनों की झलक यहाँ देखते हैं।

लंबे समय से दहेज के कारण बहुओं को मारा पीटा और जलाया जा रहा है। महिलाओं ने दहेज के खिलाफ 1980 के दशक में जोरदार आंदोलन छेड़ा। इसमें बड़ी संख्या में महिलाओं ने भाग लिया। खास कर उन औरतों ने जिन्होंने अपनी बहन-बेटी दहेज के कारण खोई थी। महिला समूहों ने दहेज पर जगह-जगह नुक्कड़ नाटकों का प्रदर्शन किया, प्रताड़ित महिलाओं व उनके परिवारों को कानूनी सलाह और मानसिक बल दिया।

महिलाओं ने सड़कों पर उतर कर कचहरी का दरवाजा खटखटाया एवं अपनी माँगों को रखा। आंदोलन की वजह से यह समाज का बड़ा मुद्दा बन गया और समाचार पत्रों में भी खासी चर्चा हुई। परिणामस्वरूप दहेज कानून बना ताकि ऐसे लोगों को दंड दिया जा सके, जो दहेज संबंधित अपराध में संलिप्त है।

**दहेज के खिलाफ**

**इस जेल को तोड़कर रहेंगे!**

तोड़-तोड़ के बंधनों को,
देखो बहनें आती हैं
ओ देखो लोगों देखो बहनें आती हैं,
आएँगी, जुल्म मिटाएँगी,
ये तो नया जमाना लाएँगी।

©BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

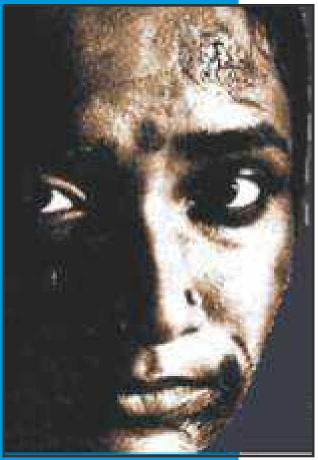

## घरेलू हिंसा के खिलाफ आंदोलन

क्या आपने अपने परिवार या आस पड़ोस में महिलाओं को रोज मार-पीट, गाली-गलौज और उन्हें छोटी-छोटी बातों पर प्रताड़ित होते देखा है? या फिर लड़के चलते लड़कियों और महिलाओं के साथ छेड़ छाड़ होते देखा है?

घरेलू हिंसा महिलाओं की एक आम और गंभीर समस्या रही है। इसको लेकर महिला समूह लंबे समय से संघर्ष कर रहे हैं। अब जाकर 2006 में घरेलू हिंसा उत्पीड़न कानून पारित हुआ। यह महिलाओं का घर में शारीरिक और मानसिक हिंसा को रोकने हेतु बनाया गया कानून है।

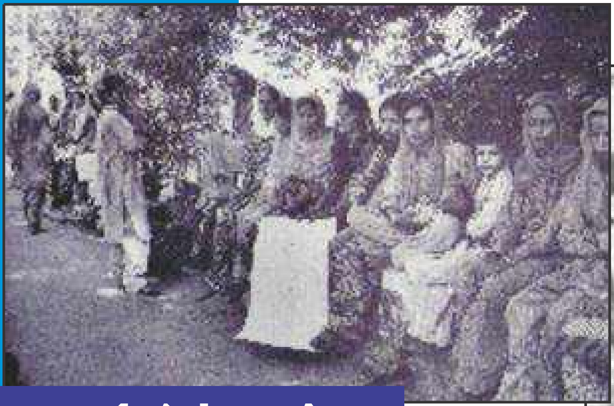

**शराब विरोधी आंदोलन**

इस चित्र में आपको क्या दिख रहा है? क्या आपके इलाके में ऐसी समस्या है? **?**

**चिपको आंदोलन**

यह औरतें ऐसा क्यों कर रही हैं? शिक्षक के साथ चर्चा करें। **?**

## लिंग जाँच विरोधी आंदोलन

इस पोस्टर द्वारा क्या कहने की कोशिश की जा रही है? **?**

WEBCOPY. NOT TO BE PUBLISHED
© BSTBPC

## अभ्यास

1. आपके विचार से महिलाओं के बारे में यह प्रचलित धारणा है कि पुरुषों के समान कार्य नहीं कर सकती है, उनके विचार से यह महिलाओं के अधिकार को कैसे प्रभावित करता है?
2. महिला आंदोलन द्वारा अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए किन्हीं दो प्रयासों का उल्लेख करें।
3. समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार करने के लिए कौन-कौन से कदम उठाए जा सकते हैं? उल्लेख करें
4. किसी ऐसी महिला की कहानी लिखें, जिसने अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए विशेष प्रयास किया हो।

अध्याय 6

# मीडिया और लोकतंत्र

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

आपने वर्ष 2008 में कोसी के बड़े इलाके में आई विनाशकारी बाढ़ के विषय में सुना होगा।

यह खबर आपको किन-किन माध्यमों से पता च

क्या आपके कोई रिश्तेदार, परिचित अथवा मित्र इससे प्रभावित हुए थे?

उनके हालचाल आपको किस माध्यम से प्राप्त हुए थे?



SOL www.absol.in

कोसी के बड़े इलाके में बाढ़

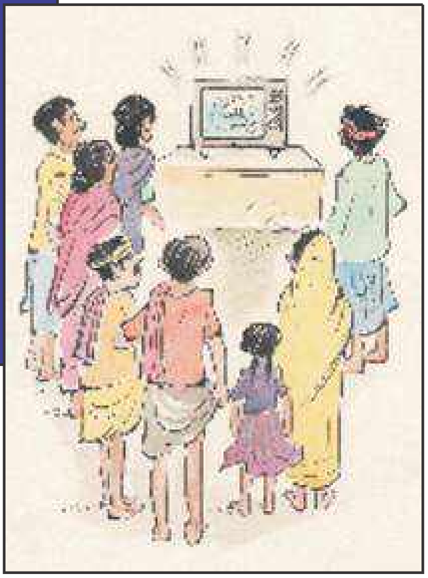

आप जब इन प्रश्नों का उत्तर तैयार करेंगे तो संचार माध्यमों की एक सूची आपके हाथ में होगी।

समाज ने विचारों एवं ख़बरों के आदान प्रदान का माध्यम या साधन ही मीडिया कहलाता है। समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो, टी.वी. चैनल, फोन-फैक्स, मोबाइल, इंटरनेट इत्यादि संचार माध्यमों के विभिन्न रूप हैं जिनकी पहुँच देश-विदेश के जनसमूहों तक होती है इसलिए इन्हें जनसंचार माध्यम या **मास मीडिया** कहते हैं।

'मीडिया' अंग्रेज़ी शब्द 'मीडियम' से लिया गया है। मीडियम का अर्थ माध्यम है।

इस पाठ में हम सब मिलकर संचार माध्यमों के बारे में अपनी समझ बनाने की कोशिश करेंगे। हम देख पाएँगे कि मीडिया हमारे रोज़मर्रा के जीवन और समाज को किस तरह से प्रभावित करती है।

## मीडिया के तकनीक में बदलाव

आज के दौर में संचार माध्यम हमारी ज़िन्दगी का महत्वपूर्ण अंग बन गए हैं। अखबार, मोबाइल, टी.वी. के बिना रोजमर्रा के जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। मोबाइल और इन्टरनेट का व्यापक उपयोग हाल ही में शुरू हुआ है।

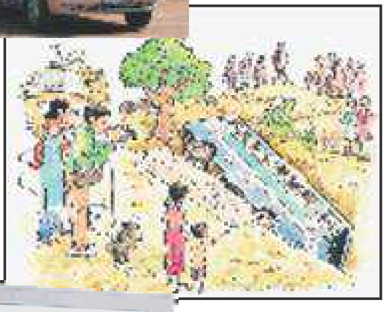

जनसंचार माध्यमों के लिए प्रयोग में आने वाली तकनीक निरंतर बदलती रहती है। बहुत समय पहले कबूतर उड़ाकर, मुनादी कराकर, डुगडुगी बजाकर या ढोल पीटकर संदेश पहुँचाने की प्रथा थी। आज भी कई गाँवों व शहरों में लाउडस्पीकर द्वारा सूचनाएँ दी जाती हैं। संदेश पहुँचाने की यह प्रथा तकनीक के विकास के साथ-साथ बदलती गई। बदलते हुए तकनीक का प्रभाव है कि आज अखबार, टी.वी., रेडियो के ज़रिए खबरों और सूचनाओं को बहुत कम समय में लाखों लोगों तक पहुँचाया जा रहा है। कई बार घटनाओं का विवरण, लोगों से बात-चीत एवं दृश्य का प्रसारण सीधे घटना-स्थल से किया जाता है

कुछ चित्रों के माध्यम से हम यह देख सकेंगे कि पिछले सालों में जनसंचार माध्यम के प्रयोग में लाई जा रही तकनीक किस प्रकार बदली है और आज भी बदलती जा रही है।

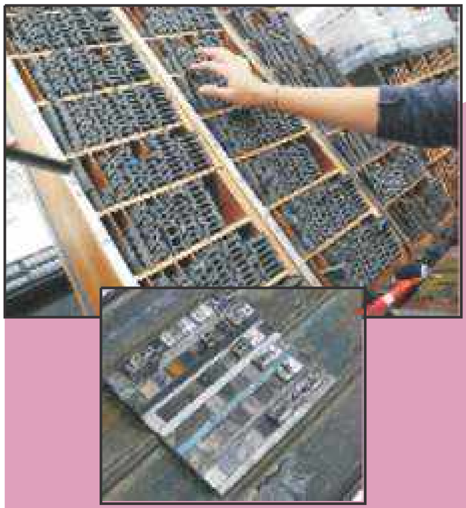

लेटर प्रेस

ऑफसेट छपाई

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

हम संचार माध्यमों की चर्चा दो रूपों में करते हैं— अखबार, पत्र पत्रिकाओं को छपे हुए माध्यम के रूप में और टी.वी., रेडियो, इन्टरनेट आदि प्रचलित माध्यमों को इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के रूप में।

तकनीक के इस विकास का प्रभाव हमारी अपनी जिन्दगी और समाज पर भी पड़ता है। ज़रा सोचिए कि टी.वी. के आने के बाद हमें पूरी दुनिया की जानकारी चित्रों सहित मिलने लगी है। हम घर बैठे अफ्रीका के जंगलों में रहने वाले जानवरों को देख सकते हैं। क्या ऐसा नहीं लगता कि पूरी दुनिया मानो सिमटकर हमारे कमरे में समा गई हो! कुछ वर्षों पूर्व तक हम सभी 10वीं और 12वीं का परीक्षाफल देखने के लिए सुबह के समाचार पत्र का इंतजार करते थे और अब परीक्षाफल की घोषणा होते ही हम इंटरनेट के माध्यम से अतिशीघ्र अपना परीक्षाफल देख लेते हैं।

1. उन पाँच ऐसी खबरों की सूची बनाएँ जो भारत के किसी अन्य राज्य (बिहार को छोड़कर) की हैं और इन की जानकारी आप को टी.वी. से प्राप्त हुई है।
2. ऊपर दिए गए चित्र को देख कर यह बताओ कि मीडिया के तकनीक में क्या बदलाव आए और इनका क्या प्रभाव पड़ा?
3. अपने क्षेत्र में केबल टी.वी. का प्रयोग कब शुरू हुआ? इससे क्या फर्क पड़ा?

?

## मीडिया द्वारा लोगों में जागरूकता

संचार माध्यम देश-विदेश की खबरों के साथ-साथ सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों को भी हम तक पहुंचाते हैं। कई बार हम देखते हैं कि लोग सरकार द्वारा लिए गए फैसलों का विरोध करते हैं। असहमत होने की स्थिति में नागरिक विरोध के विभिन्न तरीकों का इस्तेमाल करते हैं। इसके तहत संबंधित विभाग के मंत्री को पत्र लेखन, हस्ताक्षर अभियान चलाना, जुलूस निकालना, धरना इत्यादि करके सरकार को अपने कार्यक्रमों पर पुनः विचार के लिए आग्रह कर सकते हैं। अखबार, टी.वी., रेडियो में इनकी खबरें, लेख एवं विचार-विमर्श का प्रसारण होता है। इस प्रकार इन बातों की चर्चा लोगों तक पहुँचती है और यह जनमानस में अहम बहस का मुद्दा बन जाता है। विभिन्न राजनैतिक दल इस बात को भली-भाँति समझते हैं कि जनता के लोकतांत्रिक अधिकारों को वे नज़रअंदाज नहीं कर सकते। इस तरह लोगों की भागीदारी लोकतंत्र को मजबूत करती है।

### मनरेगा की न्यूज़

पटना के समीप एक गाँव में मनरेगा कार्यक्रम के तहत मिट्टी कटाई का कार्य किया जा रहा था। इस काम के लिए मजदूरों की जगह बड़ी मशीनों का इस्तेमाल हो रहा था। इस कार्यक्रम में लोगों को रोजगार के अधिक से अधिक मौके दिए जाने पर बल दिया गया है। मशीनों का इस्तेमाल वर्जित है। मशीनों की जगह अधिक से अधिक लोगों को काम दिया जाता

है और गाँव में रहने वालों को कम से कम 100 दिनों के रोजगार की गारंटी दी गई है परन्तु यहां नियमों की अवहेलना की जा रही थी।

मनरेगा – (महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम) 2 अक्टूबर 2009 से पूर्व इसे नरेगा नाम से जाना जाता था।

मीडियाकर्मी के द्वारा इस खबर को प्रमुखता से अख़बारों एवं न्यूज़ चैनलों पर प्रसारित किया गया।

खबर की जानकारी उच्च अधिकारियों को प्राप्त हुई और गाँव पहुँचकर उन्होंने मशीनों से किए जा रहे काम को तुरंत बंद कराने का आदेश दिया। उन्होंने जाँच की और पाया कि मज़दूरों की जाली उपस्थिति दर्ज कर आवंटित राशि का आपस में बंदरबाट किया जाता है। जाँच अधिकारियों ने दोषियों के खिलाफ कारवाई कर मज़दूरों को उनका हक दिलवाया।

लोकतंत्र में हम सभी को बोलने और अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का हक है मीडिया इस आज़ादी का उपयोग करती है और इस कारण लाखों लोगों तक अलग-अलग विचार एवं खबरें पहुँचती हैं। संचार माध्यम सरकारी कार्यक्रमों की उपलब्धियां एवं नाकामियों को जनता तक पहुँचाती है। इस तरह लोगों में सार्वजनिक बातों पर अपने विचार बनाने में मीडिया की प्रमुख भूमिका है।

1. पिछले पन्ने पर दिए गए चित्र में आप किन-किन तरह के विरोध करने के तरीके पहचान सकते हैं? इनका मीडिया के साथ क्या संबंध है?
2. पटना के समीप गाँव में मनरेगा कार्यक्रम के तहत चल रहे काम में मीडिया द्वारा क्या किया गया और इसका क्या प्रभाव पड़ा?
3. क्या कभी मीडिया द्वारा गलत खबरें भी पहुँचायी जाती हैं? चर्चा करें।

?

## ख़बरों की समझ

नीचे दिए गए एक ही विषय वस्तु पर दो विभिन्न ख़बरों को पढ़ें।

### झमाझम बारिश से मौसम सुहाना लोगों को मिली गर्मी से राहत

(न्यूज़ ऑफ़ बिहार की रिपोर्ट)

11 जून 2009

सामान्यतः 14 जून के आसपास बिहार में मानसून प्रवेश होता है परंतु मानसून आने के पूर्व ही झमाझम बारिश और ओलावृष्टि से पिछले कुछ दिनों से परेशान हो रहे लोगों को काफ़ी राहत मिली। दिन में एकाएक काले-काले बादल मंडराने लगे। आकाश में बिजलियाँ चमकने लगीं। बादलों की तेज़ गरज सुनाई देने लगी और फिर तेज़ हवा और ओले के साथ बारिश होने लगी। इससे लोगों को गर्मी से निजात मिली। साथ ही मौसम सुहावना हो गया। बारिश से तापमान में भी काफ़ी गिरावट देखने को मिली। हालांकि मौसम के बिगड़ते मिज़ाज ने परेशानी भी खूब बढ़ाई। कई लोग बारिश में भीगते नज़र आए। सड़कों पर व आवासीय कॉलोनियों में कई पेड़ गिर गए जिसके कारण आवागमन बाधित हो गया।

### मानसून पूर्व बारिश से ही खुली नगर निगम की पोल

(निहार रंजना की रिपोर्ट)

14 जून 2009

पानी की दो बूंद में ही खुली नगर निगम की पोल। लाखों करोड़ों रुपये खर्च किए जाने के बावजूद कुछ देर की बारिश में ही सड़कें, गली-मुहल्ले में झील सा नज़ारा है। यह थोड़ी देर के लिए हुई बारिश के बाद का नज़ारा है। नगर के लोग डर रहे हैं कि अभी तो पूरी बरसात बाकी है। जब हल्की बारिश में यह हाल है तो सावन-भादो में क्या होगा? बारिश के कारण कई सड़कों पर जाम की स्थिति भी बन गयी। मुहल्लों में नाला का गंदा पानी भी उफन कर सड़कों पर फैल गया है। हर साल नगर निगम की ओर से सड़कों की सफ़ाई व छोटे-बड़े नालों की उड़ाही पर लाखों करोड़ों रुपये खर्च होते हैं परंतु नागरिकों की मुश्किलों में कोई कमी नहीं आ रही है। थोड़ी बारिश में ही नाले का गंदा पानी व मलमूत्र भी फैल जाते हैं। मुख्य सड़कों की कौन कहे, गली मुहल्ले की सड़कें भी बारिश व नाले के गंदे पानी से बजबजा रही हैं।

1. "न्यूज ऑफ बिहार" की खबर में किस बात को प्रमुखता दी गई है?
2. दोनों रिपोर्ट में क्या अंतर है? चर्चा करें।

खबरों के महत्त्व को समझते हुए ज़रूरी हो जाता है कि खबरें संतुलित हों। एकतरफा खबरें हमें किसी भी विषय की सही समझ कायम करने नहीं देती। इन दोनों खबरों को दो अलग-अलग तरीकों से लिखा गया है। अलग-अलग पहलुओं पर ध्यान दिया गया है। हमें किसी भी खबर को पढ़ते हुए उसमें छूटे हुए पहलुओं पर भी ध्यान देना चाहिए। पाठक अपनी स्वतंत्र राय कायम कर सकें इसके लिए ज़रूरी है कि खबरों के गुण–दोषों पर विचार करते हुए पढ़ें। इस तरह जिन पहलुओं को प्रमुखता नहीं दी गयी हो वह ध्यान में आ जाती हैं।

संचार माध्यम एक स्वस्थ लोकतंत्र को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है हम संचार माध्यमों के द्वारा ही देश–दुनिया की सभी जानकारियाँ पाते हैं। आजकल संचार माध्यम और व्यापार के घनिष्ठ संबंध होने से प्रायः संतुलित रिपोर्ट का प्रकाश में आना कठिन है

हमारी सोच और विचार को प्रभावित करने में मीडिया की प्रमुख भूमिका को देखते हुए हमारे लिए यह जरूरी हो जाता है कि हम दी जा रही खबरों का विश्लेषण करें। इस विश्लेषण के लिए अपने-आप से कुछ प्रश्न करें– इस रिपोर्ट से कौन-सी जानकारी देने की कोशिश की गई है, कौन-सी जानकारी छोड़ दी गई है इसे समझने की कोशिश करें।

## मीडिया का ध्यान किन बातों पर है?

किन घटनाओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाए, इसमें भी संचार माध्यमों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। कुछ खास विषयों पर ध्यान केन्द्रित करके संचार माध्यम हमारे विचारों, भावनाओं और कार्यों को प्रभावित करते हैं। हमने इस पाठ में नरेगा कार्यक्रम की एक घटना के बारे में पढ़ा। इस घटना में हम मीडिया की प्रभावकारी भूमिका को देख सकते हैं। मीडिया की पहल के कारण ही सबका ध्यान उस विषय पर गया और लोगों को नरेगा कार्यक्रम की विशेषताओं के बारे में जानकारी भी मिली।

## ऊपर दिए गए खबरों में से कौन-सी खबर हमारे जीवन से ज़्यादा जुड़ती है?

कई बार ऐसी घटनाएँ हो जाती हैं, जब संचार माध्यम उन विषयों पर हमारा ध्यान केन्द्रित करने में असफल रहते हैं, जो हमारे दैनिक जन-जीवन के लिए काफी महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए– गरीबी रेखा से नीचे रह रहे व्यक्तियों को मूलभूत सरकारी सुविधाएँ मुहैया कराना हमारे राज्य की एक बड़ी चुनौती (समस्या) है। राज्य भर में हजारों लोग इन मूलभूत सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं। फिर भी संचार के माध्यम इस विषय पर बहुत कम ही चर्चा करते हुए दिखाई देते हैं। वहीं दूसरी ओर चर्चित व्यक्ति, सिनेमा, खेल इत्यादि विषयों को प्राथमिकता दी जाती है। कुछ बातों पर मीडिया का अधिक ध्यान होता है और कई जरूरी समस्याओं पर ध्यान नहीं दिया जाता। हमारे विचारों को प्रभावित करने में मीडिया की प्रमुख भूमिका होती है। इस कारण प्रायः यह कहा जाता है कि संचार माध्यम द्वारा तय किया जाता है कि कौन से सामाजिक मुद्दे को महत्त्वपूर्ण माना जाय।

प्रमुख संचार माध्यमों की इस भूमिका से असंतुष्ट होकर कुछ लोग वैकल्पिक माध्यमों को तलाशने लगे हैं। ऐसा हम नीचे दिए उदाहरण से समझ सकते हैं।

## आल वूमेन न्यूज़ नेटवर्क

मुज़फ्फरपुर से लगभग 55 किलोमीटर दूर एक जगह है– दिघरा। दिसम्बर 2007 में यहाँ की पाँच महिलाओं ने एक छोटे वीडियो कैमरे की मदद से आस-पास की छोटी-छोटी खबरों को गाँव के लोगों तक पहुँचाना शुरू किया। ये महिलाएँ बिना बिजली और टेलीफ़ोन के लोगों की मूलभूत समस्याओं को सरल भाषा में उन तक पहुँचाती हैं।

लेकिन गाँव से लड़कियों को निकालकर उनके हाथ में कैमरा थमाना आसान न था। इसके लिए उनके घर के लोगों से बात करनी पड़ी। पता है क्या? उन्हें ये समझाने में पत्रकारों व सामाजिक कार्यकर्ताओं को काफी मेहनत करनी पड़ी। जब ये लड़कियाँ कैमरा, माइक और ट्राइपोड के साथ खबरें इकट्ठा करने निकलीं तो इन्हें गाँव के कई लोगों की फब्तियाँ भी सुननी पड़ीं। इन सबके बावजूद लगभग 50 मिनट का पहला दृश्य बनकर तैयार हुआ। पहली बार जब इस दृश्य को रुदकेन की पंचायत हाट में दिखाया गया तो वहाँ के ग्रामीणों के लिए यह आकर्षण की एक नई चीज़ थी।

> इस प्रकार का कोई अन्य कार्यक्रम के बारे में जानते हैं तो चर्चा करें?
>
> **?**

अपना समाचार 'आल वूमेन न्यूज़ नेटवर्क' नाम से जाना जाता है। एक गाँव से शुरू होकर आज यह ज़िले के करीब छह प्रखण्डों के दर्जनों गाँवों की समस्याओं को लोगों तक

पहुँचा रहा है। इसमें प्रसारित होने वाली ख़बरें मुख्यतः किसानों के मुद्दे, गाँव की समस्याओं, सामाजिक कुरीतियों, गरीबी, कल्याणकारी योजनाओं में गड़बड़ी, आदि मुद्दों पर सटीक जानकारी देती हैं। इन ख़बरों को देखने वाले गाँव के ही किसान, दुकानदार, मज़दूर, पंचायत के सदस्य, शिक्षक, छात्र-छात्राएँ एवं आस-पड़ोस की ग्रामीण महिलाएँ होती हैं। यह प्रसारण निःशुल्क एवं अपने खर्चे पर किया जाता है

1. संचार के वैकल्पिक माध्यमों में हस्तलिखित अख़बार, सामुदायिक रेडियो, लघु पत्रिका इत्यादि का चलन बढ़ा है। शिक्षक की मदद से चर्चा करें
2. कुछ अख़बारों को पढ़कर समझाएँ कि आपके इलाके के बारे में छपी ख़बरें में किन बातों पर ध्यान दिया जा रहा है?
3. आपके विचार से क्या कुछ बातों पर मीडिया का कम ध्यान है?

इस पाठ में हमने समझने की कोशिश की – मीडिया क्या है? उसके द्वारा जागरूकता कैसे फैल सकती है और उसके ख़तरे क्या हैं? ख़बरों को कैसे समझें एवं मीडिया में प्रसारित ख़बरों की आलोचना करते हुए कैसे देखें? किन बातों पर मीडिया का ध्यान नहीं रहता है और इसका क्या कारण है यह भी समझने का प्रयास करें। अगले पाठ में हम मीडिया और विज्ञापन को समझेंगे।

## अभ्यास

1. अगर आपको कैमरा दे दिया जाए तो आप इसका कैसे प्रयोग करेंगे?
2. आपके विद्यालय में होने वाले किसी कार्यक्रम पर एक ख़बर तैयार करें।
3. आपके विचार से संचार का कौन-सा माध्यम ज़्यादा लोकप्रिय है? कारण सहित बताएँ।
4. किसी बड़ी घटना की जानकारी आपको किन-किन माध्यमों से हुई। चर्चा करें
5. सूचना के आधुनिक संचार माध्यमों से क्या फ़र्क पड़ा?
6. किसी दो प्रमुख समाचार पत्रों के प्रथम पृष्ठ पर दिये गये शीर्षकों की ख़बर का विवरण तैयार करें और देखें कि उनकी ख़बरों में क्या समानता और भिन्नता है

# अध्याय 7

# विज्ञापन की समझ

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

एक विद्यालय के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन राज्य के शिक्षा मंत्री के द्वारा होना था। बच्चे बेसब्री से उस क्षण का इंतजार कर रहे थे और वे आगे की पंक्ति में बैठने के लिए भागम-भाग कर रहे थे। उसी समय एक शिक्षक ने सूचना दी कि अगली पंक्ति की कुर्सियाँ मीडिया क्षेत्र से जुड़े हुए व्यक्तियों के लिए है। इस कार्यक्रम में समाचार पत्र, रेडियो, टी.वी. आदि से जुड़े हुए व्यक्ति आयेंगे

तभी एक छात्र ने जिज्ञासावश शिक्षक से पूछा कि क्या इन मीडिया वालों को हमारे विद्यालय का पैसा दिए जाएँगे? शिक्षक ने बताया कि उन्हें अपनी संस्था से वेतन मिलता है और संस्था ने ही उन्हें यहाँ भेजा है। ये संस्था चाहे अखबार हो या टी.वी. चैनल, अपनी आमदनी के लिए 'विज्ञापन' पर निर्भर हैं इस पाठ में आगे विस्तृत जानकारी दी जा रही है।

किसी घटना या कार्यक्रम का प्रकाशित या प्रसारित होने के कई चरण होते हैं। इसमें आधुनिक मशीनों के साथ साथ कुशल कर्मियों की आवश्यकता होती है। संचार माध्यमों को अधिक लोगों तक पहुँचाने में आधुनिक तकनीक से विशेष मदद मिली है। इन आधुनिक संचार माध्यमों के संचालन में अत्यधिक धन की

आवश्यकता होती है, जो सामान्यतः किसी एक व्यक्ति के द्वारा लगा पाना संभव नहीं होता। इसी कारण टी.वी., अखबार, रेडियो किसी बड़े व्यावसायिक समूह द्वारा संचालित होते हैं।

संचार माध्यम अपने उद्देश्यों को पूरा करने एवं धन कमाने के लिए विभिन्न प्रकार के तरीकों का इस्तेमाल करते हैं। इसके लिए वे विज्ञापनों का सहारा लेते हैं जो उनकी आय का प्रमुख स्रोत है। विज्ञापन का क्षेत्र काफी बड़ा बन चुका है। संचार माध्यमों को अपने खर्चे हेतु विज्ञापनों पर निर्भर होना पड़ता है। विज्ञापन देने वाले मुख्यतः व्यापारिक संस्थान होते हैं। अतः संचार माध्यमों को वे अपने फायदे के लिए प्रभावित भी करते हैं।

## विज्ञापन क्या है?

आज हम चारों तरफ विज्ञापनों से घिरे हैं। रेडियो, टी.वी., अखबार, इन्टरनेट से लेकर टैक्सी, रिक्शा और दीवारों पर विज्ञापन देखे जा सकते हैं। एक ही विज्ञापन विभिन्न माध्यमों से कई कई बार हमारे सामने दिखाई पड़ते है। वस्तुओं से लेकर शैक्षिक एवं व्यावसायिक

संस्थाओं तक के विज्ञापन बनाये जा रहे हैं, जैसे — कपड़े, इलेक्ट्रॉनिक, दवाएँ, मोटरबाइक, पेंट, साबुन, तेल, आटा, चॉकलेट, बिस्कुट, कलम आदि के साथ-साथ विभिन्न प्राइवेट स्कूलों, मेडिकल एवं इंजीनियरिंग कालेजों के विज्ञापन हम अपने चारों तरफ विभिन्न रूपों में देख सकते हैं। विज्ञापन में कई प्रकार के उत्पादों के गुणों को दिखाकर हमारा ध्यान उस ओर आकर्षित किया जाता है, जिससे वस्तुओं व उत्पादों की बिक्री में वृद्धि हो सके। विज्ञापन द्वारा उत्पादक कंपनियाँ अपने बाज़ार का विस्तार करती हैं। इससे उत्पादक को अधिक लाभ मिलता है। इन्हीं विज्ञापनों से होने वाली आय द्वारा संचार माध्यम संचालित होते हैं

1. विज्ञापन कौन देते हैं? संचार माध्यम इस पर क्यों निर्भर हैं?
2. आपके पसंदीदा विज्ञापन कौन-कौन से हैं? वे आपको किस तरह आकर्षित करते हैं? शिक्षक के साथ चर्चा करें

**?**

## ब्रांड

सोनू पेंसिल खरीदने दुकान जाता है और पेंसिल माँगता है। दुकानदार सोनू को एक पेंसिल देता है। सोनू कहता है, "मुझे स्वराज पेंसिल चाहिए।" दुकानदार पेंसिल देते वक्त सोनू से पूछता है, "स्वराज पेंसिल ही क्यों?" सोनू ने कहा, "मैंने टी.वी. में देखा है कि इस पेंसिल से लिखावट सुन्दर होती है।" वह पेंसिल लेकर घर चला जाता है। सोनू के मन में प्रश्न उठता है कि बाजार में पेंसिल तो बहुत हैं फिर उनके अलग-अलग नाम क्यों हैं? लिखावट कैसे सुंदर हो सकती है?

'स्वराज', पेंसिल के ब्रांड का नाम है। विज्ञापन ब्रांड निर्मित करने के बारे में ही है। एक उत्पाद को बाज़ार में प्रचलित अन्य उत्पादों से भिन्न दिखाने के लिए ब्रांड का नाम दिया जाता है। जिससे एक विशिष्ट पहचान स्थापित करने की कोशिश की जाती है।

केवल ब्रांड के नाम आपको किसी वस्तुओं को खरीदने के लिए प्रेरित नहीं करते। विज्ञापित कंपनी अपनी वस्तुओं की गुणवत्ता का विश्वास दिलाती है और कई बार तो गुणवत्ता से अधिक के दावे भी करती है। विज्ञापित उत्पाद के प्रति आश्वस्त करने में और उसे खरीदने

के लिए प्रेरित करने में विज्ञापन की भूमिका प्रमुख होती है। एक ब्रांड से प्रभावित होकर हम उस ब्रांड की अन्य वस्तुओं को भी खरीदने लगते हैं।

## विज्ञापन के सामाजिक मूल्य

विज्ञापन हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। हम इन विज्ञापनों के आधार पर न केवल उत्पाद खरीदते हैं, वरन ब्रांड उत्पादों का उपयोग करने से हम अपने और अपने मित्रों तथा परिवार के बारे में एक अलग तरह से सोचने भी लगते है। आगे दो विभिन्न उत्पादों के द्वारा इसे और अधिक समझने का प्रयास करेंगे।

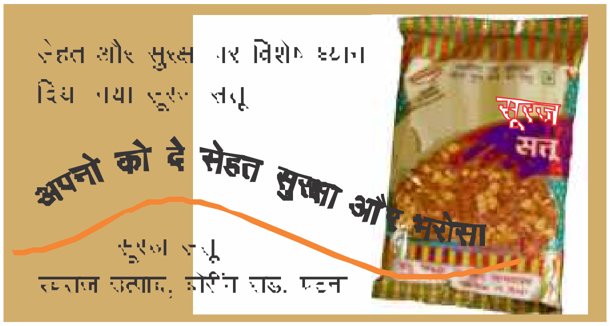


सत्तू के इस विज्ञापन में हमारी सेहत और सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया है। बन्द पैकेट वाले सत्तू के तुलना में खुले सत्तू के खराब होने की आशंका को दर्शाया गया है। दरअसल हमारे आसपास के बाजार में उपलब्ध खुले सत्तू और बंद पैकेट वाले सत्तू की गुणवत्ता में कोई खास अंतर नहीं पाया जाता है। परन्तु विज्ञापन में पैकेट बंद सत्तू सुरक्षित और अन्य सत्तू से बेहतर होने का दावा करता है। प्रायः यह बंद पैकेट वाले सत्तू आसपास के किराना दुकानों से लेकर बड़े-बड़े मॉल में आसानी से उपलब्ध होते हैं। इस विज्ञापन में सेहत के प्रति हमारी चिंता को आधार बनाया गया है।

पूँजी के अभाव के कारण खुले सत्तू के विक्रेता अपना विज्ञापन नहीं कर पाते और विज्ञापित बंद पैकेट वाले सत्तू से उनकी प्रतियोगिता बढ़ जाती है। अंततः उनकी बिक्री भी प्रभावित होती है और वे व्यवसाय छोड़ने को मजबूर होने लगते हैं।

वधु चाहिए

कायस्थ लड़का NTPC Engr M.Tech. 32/5'8" स्मार्ट, पिता Rtd. Engr. गोरी, सुंदर सुयोग्य वधु चाहिए। शीघ्र विवाह

हमारे समाज में गोरा, आकर्षक एवं दूसरों से अलग दिखने की होड़ है। इसे सुन्दरता से जोड़ा जाता है। लड़कियों में गोरा एवं आकर्षक होना विवाह के लिए आवश्यक तत्व के रूप में देखा जाता है।

विज्ञापन हमारी इसी भावना का गलत इस्तेमाल करता है। विज्ञापन न केवल हमारी गोरे होने की चाहत को बढ़ावा देता है बल्कि यह आश्वासन भी देता है कि गोरे होकर हम सब कुछ पा सकते हैं जबकि इसका वैज्ञानिक कारण यह है कि हमारी त्वचा मे "मिलेनिन" नाम का पदार्थ होता है जिनसे हमारी त्वचा का रंग तय होता है।

'मेलेनिन' हमें सूरज की नुकसानदायक पराबैंगनी किरणों से बचाता है। जिनकी त्वचा में मिलेनिन की मात्रा ज्यादा होती है वे सांवले दिखते हैं और जिनमें कम वे गोरे दिखते हैं। कोई भी क्रीम मिलेनिन की मात्रा कम या ज़्यादा नहीं कर सकती। गोरा करने वाली क्रीमों में एक ऐसा रसायन होता है जिससे चेहरे के बाल सुनहरे हो जाते हैं और चेहरे का रंग कुछ दिनों के लिए साफ दिखता है। ये रसायन त्वचा के लिए अच्छे नहीं होते। तब आप ही सोचें कि गोरापन बढ़ाने वाली क्रीम सच बोल रही है या हमें मूर्ख बना रही है? सबसे बड़ी बात तो यह पहचानना है कि हम सब के रंग-रूप में कोई न कोई फर्क होता है

प्रश्न— गोरेपन या सांवलेपन से सुन्दरता को आँकना कहाँ तक आपको सही लगता है? ?

## विज्ञापन कैसे बनता है?

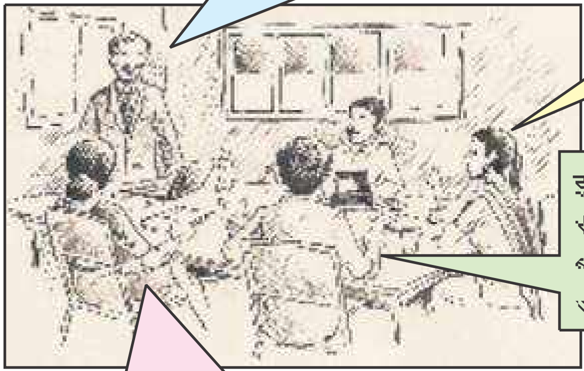


इस चर्चा के बाद क्रीम बनाने वाली कंपनी ने विज्ञापन तैयार करने के लिए एक अन्य कंपनी को काम सौंप दिया। उन्होंने यह सब बातें समझ कर गीत तैयार किया, एक छोटी फिल्म बनाई और पोस्टर भी तैयार किया। फिर कुछ लोगों को दिखा कर उनकी प्रतिक्रिया ली गई उसमे सुधार किया गया। इसके बाद ही टी0वी0, पोस्टर, रेडियो पर यह विज्ञापन दिया गया और बाजार में यह बिकने लगी

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के द्वारा लोकहित में कुछ विज्ञापन दिए जाते हैं।

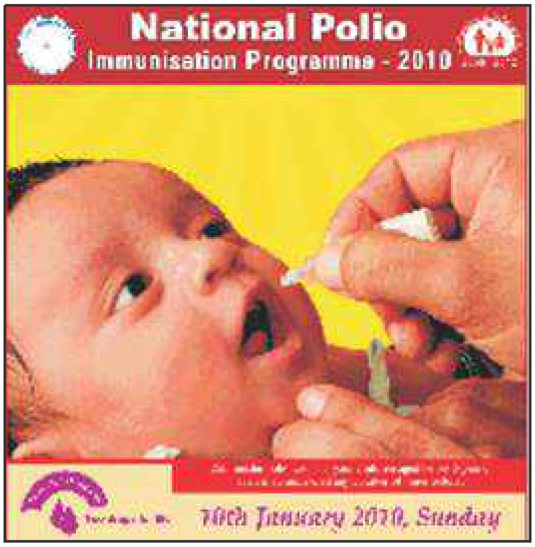

इन विज्ञापनों और पूर्व के दोनों विज्ञापनों में क्या अन्तर है? **?**

## विज्ञापन एवं लोकतंत्र

विज्ञापन में बड़े बड़े व्यवसायिक प्रतिष्ठान करोड़ों रुपये खर्च करते हैं। छोटे व्यापारी के साथ स्थानीय उत्पाद इससे प्रभावित होते हैं। पर यह जरूरी नहीं कि पैकेट वाली ब्रांडेड वस्तुएँ स्थानीय वस्तुओं से अच्छी ही हों। विज्ञापन से कई बार गरीब लोगों के आत्म सम्मान को ठेस पहुँचती है। जो विज्ञापित वस्तुएँ नहीं खरीद पाते हैं वे हीन भावना से ग्रसित होने लगते हैं। विज्ञापन धनी एवं प्रसिद्ध लोगों पर ध्यान केन्द्रित करता है और गरीबी, भेदभाव व आधारभूत मुद्दों के बारे में हमारे विचारों को प्रभावित करता है। लोकतंत्र में समानता का मूल्य प्रधान होता है। विज्ञापनों से पड़ने वाले प्रभावों पर सजग रहना जरूरी है।

## अभ्यास

1. विज्ञापन से हम किस प्रकार प्रभावित होते हैं?
2. पैकेट वाली वस्तु और खुली वस्तु में से आप किसे खरीदना पसन्द करते हैं? क्यों?
3. विज्ञापन को बार बार प्रसारित क्यों किया जाता है?
4. आप विज्ञापन से प्रभावित होकर कौन-सी वस्तुएँ खरीदते हैं? किन्हीं पाँच वस्तुओं के बारे में लिखें।
5. विज्ञापित वस्तु की कीमत गैर-विज्ञापित वस्तु की तुलना में अधिक क्यों होती है?
6. इनमें से कौन से विज्ञापन सार्वजनिक हैं और कौन से व्यावसायिक? नीचे दी गयी तालिका में भरें। फिर अपने अनुभव के आधार पर कुछ और उदाहरण जोड़ें।

    कोल्डड्रिंक्स का विज्ञापन

    पल्स पोलियो का विज्ञापन

    गाबाइज का विज्ञापन

    असुरक्षित रलवे क्रॉसिंग को पार करने का विज्ञापन

| व्यावसायिक विज्ञापन | सार्वजनिक विज्ञापन |
|---|---|
| 1. | 1. |
| 2. | 2. |
| 3. | 3. |

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

## अध्याय 4

# हमारे आस-पास के बाज़ार

**पहेली बूझो**

1. वे घर-घर जाते हैं
   आवाज़ें भी खूब लगाते हैं
   ले लो, ले लो, कुछ तो ले लो
   कौन है वो, तुम जल्दी बोलो।

2. एक जगह पर रहती हूँ
   चीज़ें बहुत सी रखती हूँ
   पैसे दे दो, चीज़ें ले लो
   कौन हूँ मैं, यह तो बोलो।

3. दोपहर को मैं आती हूँ
   शाम चली जाती हूँ
   निकल सको तो मिल जाओ
   नहीं तो मिलेंगे सात दिन बाद।

**क्या तुम इन पहेलियों को हल कर पाए?**

जब हम लोग आस-पास की जगहों पर नज़र दौड़ाते हैं तो बाज़ार दिखता है। बाज़ार में दुकानें दिखाई पड़ती हैं। इन दुकानों में तरह-तरह के सामान होते हैं, जैसे कि कपड़े, चावल, लिट्टी-चोखा, चाट-पकौड़ा, गुंजा, सब्ज़ी, साबुन, मंजन, मसाले, कॉपी, किताब, अखबार, टी. वी., मोबाइल आदि रहते हैं। यदि हम लोग बाज़ार में मिलने वाले सामानों की सूची बनाएँ तो यह सूची बहुत बड़ी होगी


www.abscl.in

हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बाज़ार जाते हैं। बाज़ार के कई रूप हैं। हम सामानों के लिए नजदीक की दुकान, साप्ताहिक बाज़ार, बड़ी दुकान तथा शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में जाते हैं।

इस पाठ में हम बाज़ार को जानने का प्रयास करेंगे। बाज़ार किस किस तरह के होते हैं? वस्तुएँ कैसे खरीदी एवं बेची जाती हैं? खरीददार तथा बेचने वाले कौन हैं? इनकी समस्याएँ क्या-क्या हो सकती हैं ?

## गाँव की दुकान

एक छोटे से गाँव चलहरा में रामजी का परिवार खेती के साथ-साथ दुकान भी चलाता है। वह खैनी, माचिस, नमक, गुड़, चाय, चीनी, टॉफियाँ, तेल आदि किराने का सामान बेचता है। गाँव में ऐसी तीन-चार दुकानें हैं।

एक दिन सुबह रामजी की दुकान खुलते ही एक लड़की आई और बोली, "मुझे दस रुपये की चाय दे दो"। फिर दो लोग आए और उन्होंने बीड़ी और माचिस खरीदी। कुछ देर बाद एक लड़का आया और पैसा बाद में देने की बात कहकर एक पाव तेल उधार ले गया। रामजी गाँव के सभी लोगों को पहचानता है। इसलिए बहुत से लोगों को वह सामान उधार भी देता है। एक वृद्ध महिला चावल दे कर चीनी ले गई। रामजी के दुकान में सामान के बदले सामान भी मिलता है। अपनी छोटी-छोटी ज़रूरतों के लिए यहाँ के लोग रामजी की दुकान पर निर्भर हैं। कोई चीज़ की कभी अचानक ज़रूरत पड़ी तो वे रामजी की दुकान से ले लेते हैं।

1. रामजी की दुकान से लोग किन-किन कारणों से सामान ख़रीदते हैं?
2. किराने के सामान के लिए जलहरा के कुछ लोग ही रामजी की दुकान पर बार-बार आते हैं। ऐसा क्यों?
3. बहुत कम मात्रा में सामान ख़रीदने पर महँगा मिलता है। उदाहरण देते हुए अपना मत रखिए।

## बड़े गाँव का बाज़ार

क्या जलहरा के लोगों के पास सामान ख़रीदने के लिए यही एक जगह है? क्या आस-पास कोई बाज़ार नहीं है? ऐसा तो नहीं होगा। जलहरा के आस-पास कई गाँव हैं जहाँ रामजी की दुकान जैसी कई दुकानें हैं।

पास में एक बड़ा गाँव तियरा है। यहाँ लगभग 500 घर हैं। तियरा गाँव में बाज़ार है। यहाँ 15-20 दुकानें हैं जिसमें 7-8 किराने की दुकानें हैं। इसके अलावा कपड़े, साइकिल मरम्मत, मिठाई, सब्ज़ी-फल, चाय नाश्ता तथा दूध की दुकानें है। ठेले पर भुजा, छोले, गोलगप्पा आदि मिलते हैं। इस बाज़ार में सामान ख़रीदने तियरा के अलावा आस-पास के गाँवों के लोग आते हैं। इस बाज़ार में सामान की अच्छी बिक्री होती है। यहाँ भी दुकानदार कई लोगों को सामान उधार देते है।

1. जलहरा की दुकान और तियरा के बाज़ार में क्या अंतर है?
2. आस-पास के गाँवों के लोग किन कारणों से तियरा के बाज़ार आते हैं?
3. उधार लेना कभी तो मजबूरी है, तो कभी सुविधा। उदाहरण देकर समझाओ।

# साप्ताहिक बाज़ार या हाट

साप्ताहिक बाज़ार सप्ताह के एक निश्चित दिन और जगह पर लगने वाला बाजार है। दुकानदार वहाँ दोपहर को दुकान लगाते हैं और शाम को समेट लेते हैं। अगले दिन वह अपनी दुकान किसी दूसरे साप्ताहिक बाज़ार में लगाते हैं। ऐसे बाजारों में लोग रोजमर्रा की जरूरत की चीजें खरीदने आते हैं।

साप्ताहिक बाज़ार में अधिकांश दुकानदार अपने परिवार वालों की मदद से काम करते हैं। साप्ताहिक बाज़ार में एक जैसे सामान बेचनेवालों की कई दुकानें होती हैं। इसलिए उन्हें आपस में कड़ी प्रतियोगिता का सामना करना पड़ता है। कोई भी अपना सामान साप्ताहिक हाट में बेच सकता है। इस कारण हाट में बहुत-सी दुकानें लगती हैं।

यदि कोई विक्रेता अपनी वस्तु का अधिक दाम बोलता है, तो लोगों के पास यह विकल्प होता है कि वे दूसरी दुकानों से सामान खरीद लें। खरीददार के पास भी यह मौका है कि वह सामान का मोल-भाव करके कीमत कम करवा सके। साप्ताहिक बाज़ार की विशेषता होती है कि यहाँ ज़्यादातर वस्तुएँ सस्ती एवं एक ही स्थान पर मिल जाती हैं। अलग-अलग सामानों के लिए अलग स्थानों पर जाने की ज़रूरत नहीं होती। स्थानीय लोगों को आस-पास के गाँवों के लोगों से भी मिलने का अवसर प्राप्त होता है।

1. लोग साप्ताहिक बाज़ार जाना क्यों पसन्द करते हैं ?
2. साप्ताहिक बाज़ार में वस्तुएँ सस्ती क्यों होती हैं ?
3. मोल भाव कैसे और क्यों किया जाता है ? अपने अनुभव के आधार पर टोलियाँ बना कर नाटक करें।
4. साप्ताहिक बाज़ार में जाने का अनुभव लिखें।

?

# शहर में मोहल्ले की दुकान

एक दिन जूही एवं पूरन अपने घर के पास की किराना दुकान पर सामान खरीदने पहुँचे। वे लोग अक्सर खरीददारी के लिए यहीं आते हैं। दुकान में बहुत से ग्राहक पहले से ही सामान खरीद रहे थे। दुकानदार दो सहायकों एवं अपनी दो बेटियों की सहायता से दुकान चला रहा था। जब पूरन और जूही दुकान के अन्दर पहुँचे तो पूरन ने दुकान मालिक को सामानों की सूची लिखवा दी। दुकानदार सूची के अनुसार सहायकों को निर्देश देने लगा। जूही दुकान में रखे हुए वस्तुओं को देख रही थी। दुकान में अलग-अलग ब्रांड के साबुन, दंत मंजन, टेल्कम पाउडर, शैम्पू, केश तेल आदि रखे थे। अलग-अलग ब्रांड और रंगों के आकर्षक सामान जूही के मन को लुभा रहे थे। फर्श पर कुछ बोरे भी पड़े थे। सभी सामानों को तौलने और बाँधने में लगभग 30 मिनट लग गए। तब पूरन ने अपनी डायरी दुकानदार को दी। दुकानदार ने डायरी में सामानों का कुल मूल्य लिखकर वापस कर दिया। उसने अपने पीले वाले रजिस्टर में यही मूल्य लिखा। पूरन और जूही अपना थैला लेकर बाहर निकले। दुकानदार को पैसे माता-पिता के वेतन मिलने पर महीने के प्रथम सप्ताह में चुका दिए जाएगा।

शहर के मोहल्ले में ऐसी बहुत सी दुकानें होती हैं, जो कई तरह की सेवाएँ और सामान उपलब्ध कराती हैं। इन दुकानों पर दूध, फल, सब्ज़ी, दाल, मसाले, खाद्य पदार्थ, स्टेशनरी, पेन इत्यादि जैसी वस्तुएँ मिलती हैं। ये दुकानें पक्की, स्थायी एवं प्रतिदिन खुलने वाली होती हैं। कुछ छोटे दुकानदार जैसे फलवाले, गाड़ी मेकेनिक, बिजली मिस्त्री, दर्जी की दुकान वगैरह फुटपाथ पर भी होते हैं।

1. आपके घर के आसपास व शहर के मोहल्ले की दुकानों का विवरण लिखें।
2. साप्ताहिक बाज़ार और इन दुकानों में क्या अन्तर है?
3. पूरन और जूही उस दुकान से ही सामान क्यों खरीदते हैं?

?

## शॉपिंग कॉम्प्लेक्स और मॉल

सुन्दर मॉल एक सात मंज़िला शॉपिंग कम्प्लेक्स है। विकास और रंजीता इसमें एस्कलेटर (बिजली से चलने वाली सीढ़ी) से ऊपर जाने और नीचे आने का आनन्द ले रहे थे। विकास एवं रंजीता को यहाँ एक साथ आइसक्रीम, बर्गर, पिज्जा आदि खाने के प्रसिद्ध रेस्टोरेन्ट, घरेलू उपयोग के सभी इलेक्ट्रॉनिक सामान, किराना वस्तुएँ, चमड़े के जूते, किताबें इत्यादि के साथ ही मल्टीप्लेक्स सिनेमाघर और ब्रांडेड कपड़ों की दुकानों को देखना अलग अनुभव प्रदान कर रहा था।

मॉल के चौथे तल पर घूमते हुए वे दोनों ब्रांडेड आभूषणों, कपड़ों, जूतों को देखते हुए आगे बढ़ गए। एक तल पर सुरक्षा कर्मचारी ने उन्हें इस प्रकार देखा जैसे वह इन्हें रोकना

चाहता हो, या कुछ पूछना चाहता हो। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। विकास एवं रंजीता ने कुछ वस्तुओं पर लगी चिटों को देखा, ये ब्रांडेड होने के कारण सस्ती नहीं थीं। उनकी कीमत अन्य बाज़ारों की तुलना में कई गुना ज्यादा थी। रंजीता ने विकास से कहा, "मैं तुम्हें स्थानीय बाज़ार से अच्छे किस्म का कपड़ा उचित दाम में दिला दूँगी।"

मॉल में आपको बड़ी बड़ी कंपनियों का ब्रांडेड सामान मिलता है। कुछ दुकानों में बिना ब्रांड का भी सामान रहता है। मीडिया एवं विज्ञापन में आपने पढ़ा था कि ब्रांडेड सामान वह सामान है जिसे कंपनियाँ, बड़े बड़े विज्ञापन देकर और क्वालिटी के दावे करके बेचती हैं। ऐसी वस्तुओं को बेचने के लिये कंपनियाँ, उसे अपने विशेष शोरुम में रखती हैं। बिना ब्रांड वाले उत्पादों की तुलना में ब्रांडेड सामान की कीमत अधिक होती है।

1. कॉम्प्लेक्स व मॉल में लोग मोल-भाव नहीं करते हैं, क्यों?
2. मॉल के दुकानदार और मोहल्ले के दुकानदार में क्या-क्या अंतर है?
3. ब्रांडेड सामान किन कारणों से महँगा होता है?
4. दुकान या बाज़ार एक सार्वजनिक जगह है। शिक्षक के साथ चर्चा करें।

## थोक बाज़ार

जो लोग वस्तुओं के उत्पादक और उपभोक्ता के बीच की कड़ी होते हैं उन्हें व्यापारी कहा जाता है। थोक व्यापारी अधिक मात्रा में वस्तुओं को खरीदता है। उन वस्तुओं को वे अपने

से छोटी पूँजी वाले व्यापारी को बेच देता है। यहाँ खरीददार एवं बेचने वाले दोनों व्यापारी ही होते हैं। इस प्रकार इसमें बाजार की कई कड़ियाँ जुड़ जाती हैं और सामान दूर-दूर तक आसानी से पहुँचता है। अन्त में ग्राहक को जो व्यापारी सामान बेचता है वह खुदरा या फुटकर व्यापारी कहलाता है। यह वह दुकानदार है, जो छोटे गाँव की दुकान, बड़े गाँव के बाज़ार, या शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में वस्तुओं को बेचता है। प्रत्येक शहर में थोक बाज़ार होता है। सामान सबसे पहले थोक बाज़ार में आता है, फिर अन्य खुदरा बिक्री करने वाली छोटी-बड़ी दुकानों तक पहुँचता है। इस प्रक्रिया को हम शहर के बड़े थोक व्यापारी जगनारायण के उदाहरण से समझेंगे।

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

## जगनारायण—एक मसाला व्यापारी

जगनारायण पटना सिटी के मारूफगंज के सबसे बड़ा मसाला व्यापारी है। वह अपनी दुकान 10 बजे सुबह शुरू करता है। आस पास और दूरदराज से व्यापारी यहाँ खरीदारी के लिए आते हैं। उसके यहाँ स्थानीय एवं राज्य के विभिन्न जिलों के अलावा देश के अन्य राज्यों से भी मसाला थोक के हिसाब से आता है। हल्दी बिहार के विभिन्न जिलों से, जीरा अन्य राज्यों से, काली मिर्च और लौंग मसाले दक्षिण भारत से आते हैं। सामान ट्रकों, मेटाडोर आदि से उसके गोदाम में पहुँचता है। वह अपना सामान छोटे व्यापारियों और फुटकर दुकानदारों को बेचता है।

## बाज़ार ही बाज़ार

गाँव से लेकर शहर तक हमने अलग-अलग बाज़ारों को देखा। वहाँ पर खरीद-बिक्री की वस्तुओं, खरीददारों, दुकानदारों को भी समझा। एक तरफ गाँव में वस्तु के बदले वस्तु (वस्तु विनिमय प्रणाली) से खरीददारी तो दूसरी तरफ शहरों में फोन एवं इन्टरनेट के माध्यम से भी खरीद-बिक्री होती है।

ऐसे कई बाज़ार भी हैं जिनसे हम सीधे तौर पर नहीं जुड़े होते हैं। हमें इनके बारे में अधिक जानकारी नहीं रहती। उदाहरण के लिए यदि हम मोटर साइकिल को लें तो हम इसे संपूर्ण रूप से तैयार खरीदते हैं लेकिन वास्तव में इसका इंजन, गियरें, पेट्रोल टंकी, एक्सल, पहिए आदि सामान कम्पनी कई अन्य कारखानों से खरीदती है। यहाँ व्यापारी व कारखानों के बीच खरीदने-बेचने का काम चलता रहता है। ग्राहक के सामने वस्तुएँ तभी आती हैं जब ये पूरी तरह बन जाती हैं।

## बाज़ार और समानता

पिछले पाठ में हमने कई प्रकार के बाज़ारों को देखा। बाज़ार सामानों का उत्पादन और बेचने का अवसर देता है। गाँव की छोटी दुकान, साप्ताहिक बाज़ार, मोहल्ले की दुकान से लेकर शॉपिंग कॉम्प्लेक्स तक की दुकानों और व्यापारियों के साथ ही खरीददारों को भी देखा। इन दुकानों एवं दुकानदारों में बड़ा अन्तर है। एक बहुत ही छोटी पूँजी वाला बड़ी पूँजी वाले के साथ बाज़ार में व्यवसाय कर रहा है। इनके लाभ का स्तर भी भिन्न होता है। साप्ताहिक बाज़ार का व्यापारी शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के दुकानदार की तुलना में बहुत कम लाभ कमाते हैं। बाज़ार के

विभिन्न रूप देखने पर आपने समझा कि बाज़ार में सबको बराबर लाभ नहीं मिलता। खरीददार भी लगभग इसी स्थिति में होता है। एक तरफ जहाँ कुछ लोग खरीददारी में जरूरत की भी कम चीज़ें खरीद पाते हैं वे दूसरी तरफ कुछ लोग मॉल में बेहिचक खरीददारी करते हैं। लोगों की आर्थिक स्थिति ही उनके क्रय शक्ति को तय करती है।

## अभ्यास

1. इस पाठ एवं अपने अनुभव के आधार पर इन दुकानों की तुलना करें और निम्नांकित खाली जगहों को भरें।

| बाजार | क्या सामान मिलता है | कीमत | दुकानदार | खरीदार |
|---|---|---|---|---|
| गाँव की दुकान | | | | |
| हाट | | | | |
| शहर की दुकान | | | | |
| शॉपिंग कॉम्प्लेक्स | | | | |

2. बाजार क्या है ? यह कितने प्रकार का होता है?
3. ग्राहक सभी बाज़ारों में समान रूप से खरीददारी क्यों नहीं कर पाते?
4. बाज़ार में कुछ छोटे दुकानदारों से बातचीत करके उनके काम और आर्थिक स्थिति के बारे मे लिखें।
5. बाज़ार को समझने के लिए अपने माता-पिता के साथ आपके आस-पास के बाजारों का परिभ्रमण करके संक्षिप्त लेख लिखिए।

BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED



SOL www.sbsol.in

६. आप भी बाजार जाते होंगे। अपने अनुभव के आधार पर इस तालिका को भरें।

| | आपने क्या खरीदा? | कहाँ से खरीदा? (हाट, मोहल्ले की दुकान से) | उस दुकान या बाज़ार से क्यों खरीदा? (सुविधा, भाव, विभिन्नता, उधार गुणवत्ता) |
|---|---|---|---|
| 1 | | | |
| 2 | | | |
| 3 | | | |
| 4 | | | |
| 5 | | | |

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

7. किसी स्थानीय बाज़ार में दुकान लगाने वालों से बातचीत करके अनुभव लिखें कि उन्होंने यह काम कब और कैसे शुरु किया? पैसों की व्यवस्था कैसे की? कहाँ-कहाँ दुकान लगाता या लगाती हैं? सामान कहाँ से खरीदता या खरीदती है?

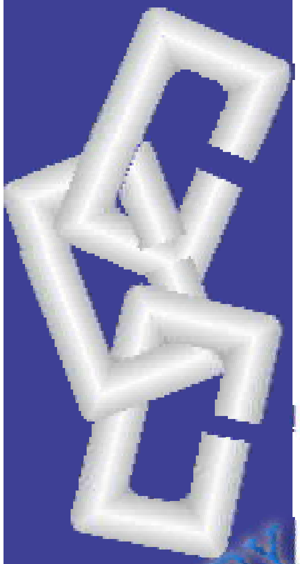

## अध्याय 9

# बाज़ार शृंखला
# खरीदने और बेचने की कड़ियाँ

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

पिछले अध्याय में हमने आसपास के विभिन्न प्रकार के बाज़ारों के बारे में जाना। इसमें हमने देखा कि बड़े दुकानदार ज़्यादा पूँजी लगाकर छोटे दुकानदार की अपेक्षा अधिक लाभ कमाते हैं। अब हम इस अध्याय में बाज़ार की शृंखला के बारे में समझेंगे। किस तरह किसान के उत्पाद स्थानीय आढ़तिया, थोक विक्रेता से होकर बड़े शहरों के खुदरा विक्रेता तक पहुँचता है। उत्पादन करने वाले से होते हुए सामान खरीदने वाले ग्राहकों तक आपस की कड़ी किस तरह जुड़ी होती है।

हम देखेंगे कि सभी उत्पाद में किसी न किसी प्रकार की बाज़ार शृंखला बनती है। इस शृंखला में खरीदने और बेचने की कई कड़ियाँ होती हैं। ये कड़ियाँ कैसे बनती हैं? क्या इन कड़ियों से जुड़े लोगों को एक समान लाभ होता है? या कुछ को दूसरों की अपेक्षा अधिक लाभ होता है? इन बातों को मखाना उपजाने वाले किसानों तथा इसके बाज़ार की शृंखला के उदाहरण द्वारा समझने का प्रयत्न करते हैं।

# मखाना

यह तालाब में उपजने वाला एक जलीय उत्पाद है। देश में मखाना के कुल उत्पादन का 85 प्रतिशत हिस्सा बिहार में होता है। दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, सहरसा, सीतामढ़ी, पूर्णिया, कटिहार, किशनगंज आदि जिलों में मखाना का उत्पादन होता है।

मखाना का प्रयोग व्रत त्योहार, पूजा पाठ, हवन सामग्री, खाने तथा नाश्ते में किया जाता है। मखाना में कई औषधीय गुण पाए जाते हैं। यह पोषक तत्वों से भी भरपूर है।

हावी भौआर गाँव दरभंगा जिला में स्थित है। इस गाँव के आसपास कई छोटे-बड़े तालाब हैं जिनमें मखाना की खेती की जाती है। इसकी खेती प्रायः मछुआरों द्वारा की जाती है। अधिकांश तालाब (लगभग 60 प्रतिशत) सरकारी होते है जो मछुआरों द्वारा बनाई गई सहकारी समितियों को तीन से सात साल के लिए एक निश्चित लगान पर (लगभग 3000 रु. प्रति एकड़ प्रति वर्ष) प्राप्त होते हैं। शेष लगभग 40 प्रतिशत तालाब निजी व्यक्तियों के होते है। जिन लोगों के पास अपना तालाब होता है वे भी मखाना की खेती प्रायः खुद नहीं करते हैं। क्योंकि मखाना उत्पादन एवं उसका लावा बनाने मे जिस दक्षता तथा कुशलता की आवश्यकता होती है वह एक खास समुदाय (मछुआरों) में पायी जाती है। अतः मखाना की खेती प्रायः इसी समुदाय के लोगों द्वारा की जाती है।

जीवछ सहनी, छुनन मांझी, सुलेमान और सलमा जैसे इस गाँव में कई ऐसे किसान हैं जो अपने परम्परागत एवं अन्य कार्यों के साथ साथ मखाना की खेती भी करते हैं। मखाने की खेती काफी कठिन तथा मेहनत की होती है। लेकिन इस की खेती में पूरे साल नहीं लगना पड़ता है साल के लगभग चार महीने इतनी मेहनत करनी पड़ती है। इसलिए शेष समय में मखाना की खेती के साथ साथ किसान अन्य कार्य भी कर सकते हैं।

सलमा एक छोटी किसान है इसलिए उसका अपना तालाब नहीं है। इसलिए सलमा ने पिछले साल की तरह इस साल भी मखाना की खेती के लिए गाँव के राज किशोर के 15 कट्ठे के तालाब को 4000 रु. सालाना की दर से किराये पर लिया था। सहकारी समितियाँ छोटे मछुआरों को छोटे तालाब नहीं देतीं इन्हें बड़े तालाबों का हिस्सा ही लेना होता है, जिसके लिए अधिक पूँजी चाहिए सलमा इतनी सक्षम नहीं है कि वह सहकारी समितियों से बड़े तालाब लेकर मखाना की खेती कर सके।

**सहकारी समिति के बारे में आप अगली कक्षा में विस्तृत रूप से जानेंगे।**

15 कट्ठे के तालाब में मखाना की खेती करने के लिए आवश्यक रुपयों के इंतजाम के लिए भी उसे अपने रिश्तेदारों से कर्ज लेना पड़ा। यदि अपना तालाब होता तो वह बैंक से कर्ज लेने की कोशिश करती।

पिछले साल भीषण बाढ़ आने के कारण तालाब में से मखाने के बीज बह गए थे। तालाब में आवश्यक मात्रा में बीज नहीं होने के कारण मखाना का उत्पादन काफी कम हुआ था। इस बार बाढ़ नहीं आने के कारण मखाने के अच्छे उत्पादन की संभावना थी। सलमा ने मखाना उपजाने में काफी मेहनत की। उसने समय पर खाद, कीटनाशक तथा पानी का उचित इन्तज़ाम किया था।

1. सलमा को सहकारी समिति से तालाब क्यों नहीं मिला?
2. सलमा सहकारी समिति से तालाब लेती तो क्या फर्क पड़ता?
3. सलमा को इस बार अच्छे फसल की उम्मीद क्यों थी?
4. सलमा ने मखाने की फसल के लिए क्या-क्या तैयारी की?

?

## गुड़ी से मखाना बनाने तक

**गुड़ी –** मखाना के कच्चे फल को गुड़ी कहते हैं। इन गुड़ियों से विशेष प्रक्रिया द्वारा मखाना का लावा प्राप्त होता है।

मखाना की फसल तैयार होने के बाद उसकी गुड़िया तालाब के नीचे बैठ जाती है। तालाब से इन गुड़ियों को निकालने के लिए एक साथ कई लोगों की आवश्यकता होती है। ये लोग तालाब से गुड़ियों को निकालने में कुशल होते हैं। वे तालाब में पानी के अंदर जा कर जमीन से गुड़ियों को इकट्ठा कर बाहर निकालते हैं। यह काफी कठिन काम होता है।

तालाब से गुड़ियों को तीन बार में निकाला जाता है। प्रथम बार में मजदूर अधिक गुड़ियों को इकट्ठा कर लेते हैं। दूसरी और तीसरी बार में तालाब में गुड़ियों की संख्या कम हो जाने के कारण मज़दूरों को गुड़ियों को निकालने में अपेक्षाकृत अधिक श्रम करना पड़ता है। सलमा को प्रथम बार में कुल 300 किलो गुड़ी प्राप्त हुआ, दूसरी बार 200 किलो और तीसरी बार 100 किलो।

**मखाना की खेती**

**गुड़िया निकालना**

इस प्रकार सलमा को तालाब से कुल 600 किलो गुड़ियाँ प्राप्त हुईं तथा इन्हें निकालने के बदले में 6,800 रुपये मजदूरी देनी पड़ी। गुड़ी निकालने में सामान्यतः एक मजदूर दिनभर में 200 से 300 रुपये कमा लेता है, लेकिन यह काम साल में कुछ ही दिनों के लिए मिलता है।

सलमा ने तालाब से प्राप्त 600 किलो गुड़ियों को लेकर पास के आशापुर कस्बे में गई। यहां कई लोग गुड़ियों से लावा बनाने का काम करते हैं। इस काम के लिए भी विशिष्ट कुशलता एवं मेहनत की आवश्यकता होती है।

गुड़ियों को कड़ाही में बालू डालकर भूना जाता है। काफी गर्म होने पर कड़ाही से निकालकर पीढ़े पर रखकर लकड़ी के हथौड़े से जोर से पीटा जाता है। इससे उन गुड़ियों से लावा निकल आता है जिसे हम मखाना के नाम से जानते हैं।

2.5 किलो गुड़ी से एक किलो मखाना का लावा प्राप्त होता है। लेकिन लावा बनाने वाले लोग 3 किलो गुड़ी के बदले 1 किलो लावा देते हैं। अर्थात् 2.5 किलो गुड़ी का लावा बनाने की मजदूरी आधा किलो गुड़ी होती है।

चार-पाँच लोग मिलकर एक दिन में 150 से 200 किलो गुड़ी का लावा बना लेते हैं। इससे प्रत्येक को गुड़ी के रूप में लगभग 200 रुपये की आमदनी हो जाती है।

1. तालाब से गुड़ी निकालने का काम कौन करते हैं?
2. गुड़ी से मखाना कैसे बनाया जाता है? अपने शब्दों में समझाओ।
3. मखाना बनाने तक सलमा ने किन-किन चीजों पर खर्च किया सूची बनाओ।

?

## स्थानीय आढ़तिया को मखाना बेचा

सलमा को अपने गुड़ियों से कुल 200 किग्रा. मखाना प्राप्त हुआ। मखाना काफी हल्का होता है। एक बड़े बोरे में लगभग 8 से 10 किलो ही आता है। सलमा का 200 किलो मखाना 20 बोरों में आया। अब वह इन 20 बोरे मखानों को मूल्य बढ़ने पर बेचने के लिए घर पर नहीं रख सकती थी। क्योंकि एक तो उसके पास जगह की कमी थी दूसरे उसे रिश्तेदारों का कर्ज भी चुकाना था। साथ किशोर को तालाब का किराया भी देना था। इसलिए उसने मखाने को वहीं स्थानीय आढ़तिया शंभू को बेच दिया। शंभू आशापुर का बड़ा आढ़तिया है। उसने सलमा का

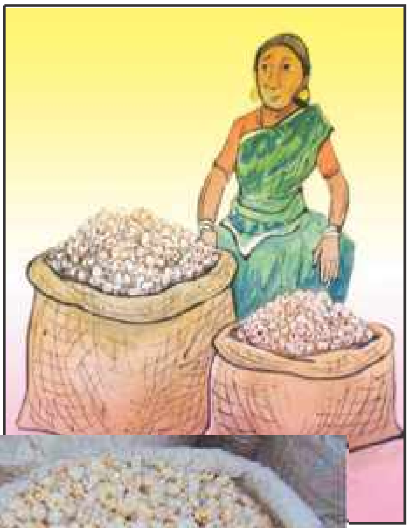

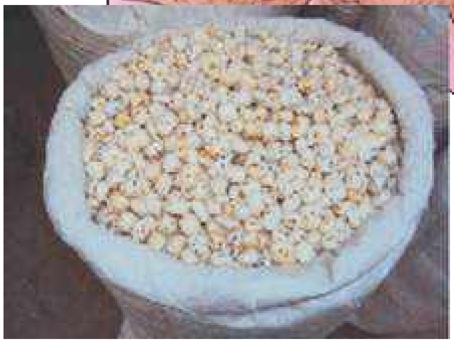

200 किलो मखाना के लिए 100 रु० प्रति किलो की दर से 20,000 रु० दिए। उसने बताया कि इस बार मखाना का उत्पादन अधिक होने के कारण मखाना का मूल्य नहीं बढ़ा है।

परन्तु इतना कम रुपया पाकर शान्ता उदास हो गयी। उसे मखाना की खेती में खाद, बीज, कीटनाशक, गुड़ी निकलाई तथा तालाब का किराया मिलाकर कुल 15,000 रुपये लागत आया था। उसके पास सिर्फ 5,000 रुपये बच रहे थे। यह तो उसका व उसके पति के मेहनत की मजदूरी भी नहीं थी। इस बार उसे कुछ लाभ की उम्मीद थी। उसने सुना था कि मखाना का बाज़ार निरन्तर बढ़ रहा है। मखाना आधारित उद्योग में मखाना के विभिन्न प्रकार के कीमती उत्पाद तैयार हो रहे है। इसका लाभ उसे भी अवश्य प्राप्त होगा। इससे वह अपने टूटे घर की मरम्मत भी करा लेगी तथा अगले साल बिना कर्ज लिये मखाना की खेती कर लेगी।

आशापुर के ये आढ़तिया ज्यादातर किसानों का मखाना कमीशन पर बेचते हैं। इनके पास पटना तथा दरभंगा के थोक मंडी में मखाना बेचने वाले व्यापारी आकर मखाना खरीदते हैं। इनसे प्राप्त रुपये में से ये 6 से 8 प्रतिशत कमीशन काटकर शेष पैसा किसानों को दे देते हैं। कई बार कुछ किसानों से ये मखाना खरीद भी लेते हैं तथा कुछ लाभ पर आगे बेचते हैं। दिन भर में 15 से 20 बोरा मखाना बेचने वाले आढ़तियों की औसत मासिक आमदनी 20,000 से 25,000 रुपये होती है जबकी इसमें इनकी अधिक पूँजी नहीं लगी होती है।

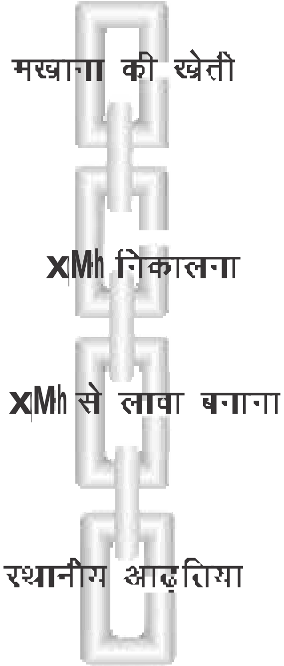

1. सलना को मखाना बेचने की जल्दी क्यों थी?
2. सलना ने जो सोचा था क्या उसे वह पूरा कर सकती है? चर्चा करें।
3. अपने आस पास के अनुभवों द्वारा पता करें कि छोटे किसान अपना उत्पाद किन्हें बेचते हैं? उन्हें किन समस्याओं का सामना करना होता है?
4. मखाना की खेती करनेवाले किसान अपनी फसल को खुद मंडी में ले जा कर क्यों नहीं बेचते?

?

## पटना के बाजार

कुछ व्यापारी आशापुर के आढ़तियों से मखाना खरीद कर पटना, दरभंगा या अन्य शहरों के थोक मंडी में बेचते हैं। मनोज ऐसे ही एक व्यापारी हैं जो दरभंगा से मखाना खरीदकर पटना की थोक मंडी में बेचते हैं। दरभंगा में इन्हें 110 रु० प्रति किलो की दर से मखाना प्राप्त होता है। पटना लाने के क्रम में परिवहन एवं पैकिंग में 8 से 10 रु० प्रति किलो खर्च आता है तथा पटना की थोक मंडी में वह 10 रु० प्रति किलो के लाभ पर मखाना बेच देते हैं

पटना के थोक विक्रेता भी प्रायः 10 रु० प्रति किलो का लाभ लेकर खुदरा दुकानदारों को बेच देता है। थोक विक्रेता बड़ी मात्रा में खरीद बिक्री करता है। इस कारण वह अधिक कमा लेता है।

खुदरा दुकानदार को यह लगभग 140 रु० प्रति किलो की दर से उपलब्ध होता है। उसे दुकानदार को मखाना लाने में लगभग 4 रु० प्रति किलो का खर्च करता है। खुदरा व्यापारी ग्राहकों को 30 से 40 रु० प्रति किलो के लाभ पर बेचता है। इस प्रकार शहरी उपभोक्ता को 170 से 180 रु० प्रति किलो मखाना प्राप्त होता है।

उक्त कड़ियों में हमलोग देखते हैं कि सबसे अधिक मेहनत के बावजूद किसानों को उचित लाभ नहीं मिल पाता है।

1. थोक व्यापारी और खुदरा व्यापारी में क्या अंतर है ?
2. थोक व्यापारी और खुदरा व्यापारी में कौन अधिक लाभ कमाता है और क्यों?

?

ग्राहकों तक पहुँचने में मखाने को किन-किन कड़ियों से गुजरना पड़ता है। निम्न रेखाचित्र देखकर समझें।

कमला ने तालाब से गुड़ी निकलवाया

आशापुर में लावा बनवाए

कमला ने स्थानीय आढ़तिया को मखाना बेचा

मखाना आढ़तियों से दरभंगा तथा पटना के थोक विक्रेताओं को बेचा गया।

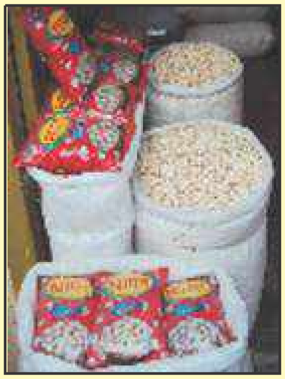

पटना के खुदरा विक्रेता को बेचा गया

दिल्ली कानपुर के थोक विक्रेता को बेचा गया

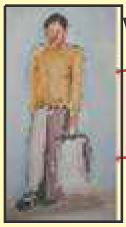

उपभोक्ता

दिल्ली कानपुर के खुदरा विक्रेता

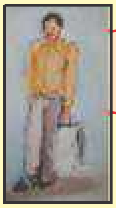

उपभोक्ता

खाड़ी देश को निर्यात किया गया

खाड़ी देश के खुदरा विक्रेता

1. आप के घर पर उपयोग की जानेवाली किन्हीं दो वस्तुओं के बारे में पता करें कि वे किन कड़ियों से गुजर कर आप के पास पहुँचती है।

## देश-विदेश के बाज़ार

कुछ थोक व्यवसायी दिल्ली जैसे शहरों के थोक व्यवसायियों को सीधे मखाना बेचते हैं। दरभंगा या पटना से दिल्ली मखाना भेजने के प्रति बोरा 100 से 110 रु० का खर्च आता है। इस प्रकार वहाँ के थोक व्यापारी को 160 से165 रुपये प्रति किलो की दर से मखाना प्राप्त होता है। दिल्ली जैसे शहरों के खुदरा दुकानों में यह 200 से 250 रु0 प्रति किलो की दर से उपभोक्ताओं को प्राप्त होता है। कई बड़े एवं आधुनिक दुकानों में मखाना अलग-अलग वजन के पैकेटों में 400 से 500 रु0 प्रति किलो की दर से बिकता है। यहाँ बिकने वाले मखाने काफी अच्छे किस्म के होते हैं।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

1. क्या इस बेहतर भाव का लाभ उत्पादक को प्राप्त हो सकता है? यदि हाँ तो कैसे ?

दिल्ली के कुछ व्यापारी इन मखानों को खाड़ी देशों में निर्यात करते हैं। ईद के अवसर पर मखाना तथा इससे बने सेवई, खीर, खाड़ी देशों में निरन्तर लोकप्रिय होते जा रहे हैं। मखाने का भारत में भी उपयोग किया जाता है।

## बाज़ार और समानता

बाजारों में यह शृंखला मखाना उत्पादक को बड़े आधुनिक दुकानों के खरीददार से जोड़ देती है। इसकी प्रत्येक कड़ी पर खरीदना और बेचना होता है। बड़े एवं आधुनिक दुकानों, सुपर मार्केट तथा मॉल का दुकानदार बेचने के आकर्षक तरीकों के बल पर अधिक लाभ कमाते हैं। उनकी तुलना में थोक विक्रेताओं एवं खुदरा विक्रेताओं का लाभ कम होता है।

अध्याय 10

# चलें मण्डी घूमने

आज सुबह-सुबह हम सब स्कूल गेट के पास इकट्ठे हो गये थे। सभी बच्चे बहुत खुश थे। हमारे शिक्षक हम लोगों को घुमाने के लिए पटना सिटी के मारूफगंज अनाज एवं मसाला मण्डी ले जा रहे थे।

मण्डी पहुँचते ही हमने देखा कि वहाँ तो चारों तरफ ट्रक, माल ढोने वाले टेम्पो और सामान ढोने वाले ठेले नज़र आ रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे हम अनाज मण्डी नहीं बल्कि ट्रक व टेम्पो स्टैण्ड में आ गए हैं। मण्डी में हमने देखा कि कई बड़े-बड़े गोदाम एवं दुकानें थीं। कुछ खाने के होटल एवं और थोक की दुकानें भी थीं।

मण्डी का एक व्यापारी सुलेमान जी हमारे शिक्षक के परिचित थे

वे हम सभी को मण्डी की एक खास गली में ले गये। वहाँ हम लोगों ने देखा कि एक ट्रक से चावल की बोरियाँ उतारी जा रही हैं। सुलेमान जी ने बताया कि इस गली में केवल चावल एवं गेहूँ की थोक दुकानें हैं। फिर उन्होंने ट्रक चालक से पूछकर बताया कि ये चावल रोहतास जिले के चावल मिल से आया है। इसके अलावा इस मण्डी में भागलपुर, चम्पारण, सिवान, गोपालगंज, वैशाली, बक्सर, औरंगाबाद, गया तथा पटना एवं आसपास से भी चावल आते हैं। चावल बिहार का प्रमुख खाद्यान्न है।

छोटे किसान अपने गाँव या अगल-बगल के गाँवों में स्थित छोटी धान कूटने वाली मिलों में चावल बनवाकर अपने पास रख लेते हैं। उसमें से अपने उपयोग के लिए चावल रखकर शेष चावल को चावल खरीदने वाले छोटे व्यापारी को बेच देते हैं। ऐसी स्थिति में किसानों को अपेक्षाकृत चावल के कम मूल्य मिलता है लेकिन इससे उन्हें सीधे अपने घर के दरवाजे पर ही पैसा प्राप्त हो जाता है। इसके बाद ये छोटे व्यापारी चावल को स्थानीय मण्डी के थोक व्यापारी को बेच देते हैं। ये थोक व्यापारी शहर के बड़े थोक व्यापारी को अपना चावल बेच देते हैं।

कुछ किसान अपने धान को सीधे बड़े चावल मिल को बेच देते हैं। शहरों के थोक विक्रेता, मिल से चावल खरीदते हैं एवं शहर के खुदरा व्यापारी को बेचते हैं

बाज़ार की कड़ियों को इस चार्ट से भी समझा जा सकता है:

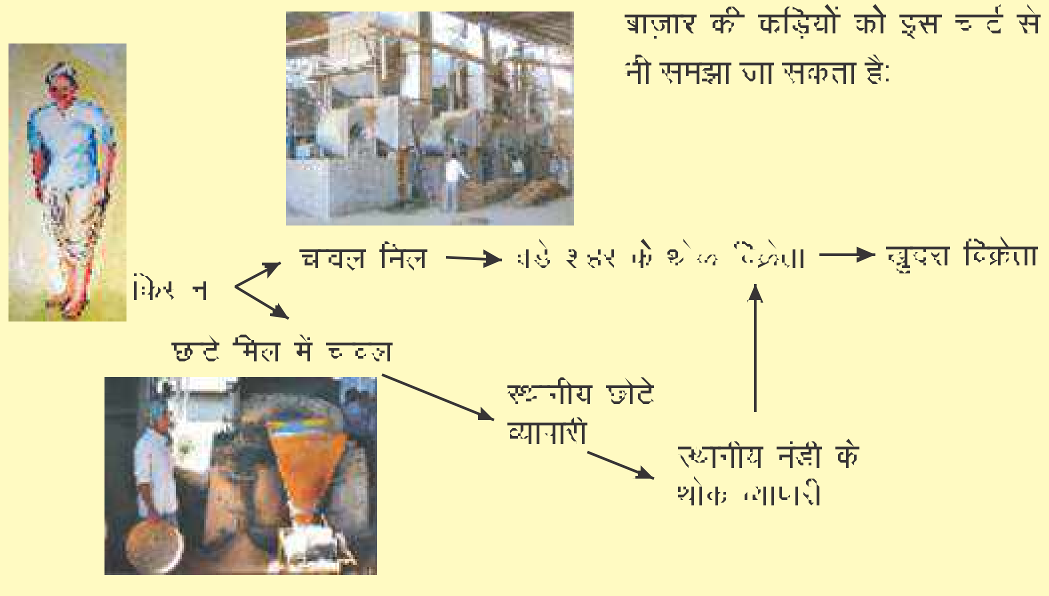


किसानों को अपनी फसल का उचित मूल्य मिले, इसके लिए सरकार फसल के लिए एक न्यूनतम मूल्य निर्धारित करती है जिसे न्यूनतम समर्थन मूल्य कहा जाता है। न्यूनतम समर्थन मूल्य का उद्देश्य किसानों के हितों का संरक्षण करना है।

प्रत्येक किसान को अपनी फसल के लिए कम से कम इस सरकारी दर की उम्मीद होती है। लेकिन बिहार के अधिकांश किसान इससे वंचित रहते हैं। सरकारी एजेन्सियाँ किसानों से निर्धारित न्यूनतम समर्थन मूल्य पर फसल खरीदती है लेकिन बिहार में किसानों को इस योजना का पूरा फायदा नहीं मिल पाता। इससे किसानों का हक मारा जाता है।

1. उपरोक्त फ्लो चित्र के अनुसार बड़े शहर की मंडी तक चावल पहुँचने के क्या-क्या तरीके हैं?
2. थोक और खुदरा बाज़ार में क्या अंतर है?
3. थोक बाज़ार की ज़रूरत क्यों होती है? चर्चा करें।
4. छोटे किसान को चावल का कम मूल्य क्यों मिलता है?

?

## खेत-खलिहान से मिल तक

इसके पश्चात् सुलेमान चाचा हम लोगों को आगे लेकर चले। वहाँ अनाज व गेहूँ की कई थोक दुकानें थीं। प्रत्येक थोक दुकानों में आगे बड़ी-बड़ी तराजू एवं पीछे गोदाम थे। इन दुकानों में गेहूँ प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से आता है। गेहूँ बिहार की दूसरी मुख्य फसल है। चावल की तरह गेहूँ भी किसानों से मण्डी तक पहुँचता है। गली के अंत में कुछ दुकानें सूजी, आटा और मैदा की थीं। सुलेमान जी ने बताया कि, "तुम्हारे घर के आस पास जो आटा चक्की होती है वहाँ से सब आटा या मैदा नहीं आता है। इनकी काफी बड़ी-बड़ी मिलें होती हैं। ऐसी मिलें पटना सिटी, दीदारगंज और दानापुर आदि जगहों पर हैं। ये मिल थोक मंडियों तथा बड़े किसानों से गेहूँ खरीदते हैं। मिल में वे गेहूँ से सूजी, मैदा तथा आटा बनाते हैं। इससे प्राप्त चोकर भी पशुओं के खाद्य के रूप में अच्छे मूल्य पर बिक जाता है। इससे मिल मालिकों को अच्छा लाभ प्राप्त होता है।

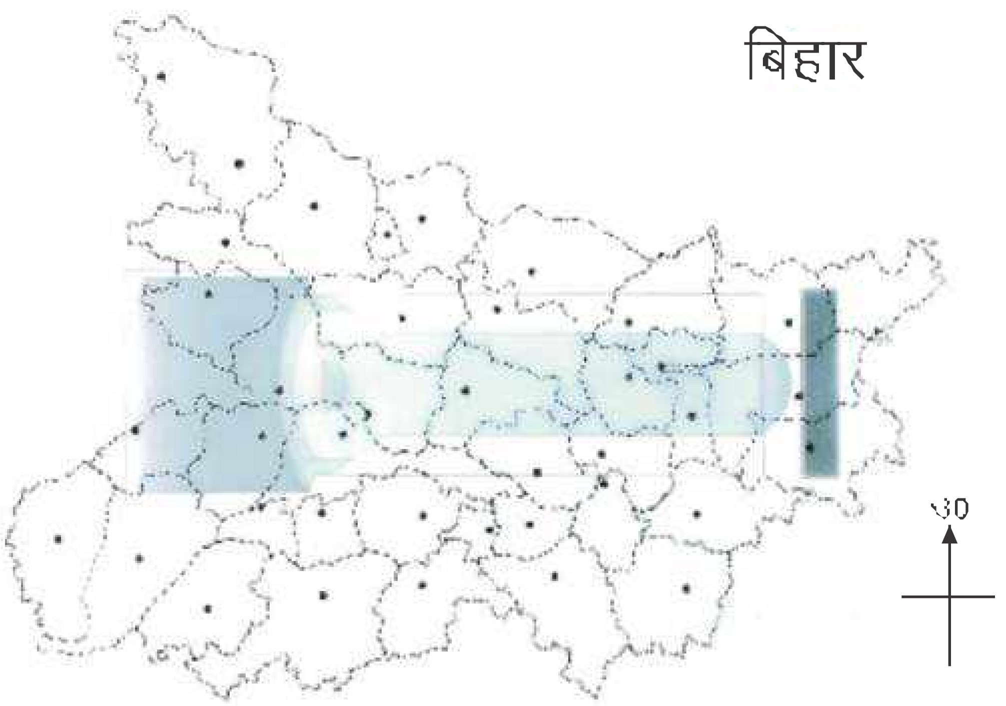

1 बिहार के दक्षिण पश्चिम क्षेत्र में स्थित रोहतास, सासाराम, कैमूर, औरंगाबाद, भोजपुर एवं बक्सर ज़िले धान के कटोरा के नाम से जाने जाते हैं। यहाँ बिहार के कुल चावल उत्पादन के 30 प्रतिशत से अधिक का उत्पादन होता है तथा काफी चावल मिलें हैं।

2. बिहार में रोहतास, चम्पारण, सीवान, मुजफ्फरपुर, नालंदा, पटना, भोजपुर, सहरसा, भागलपुर, मुंगेर, गया आदि ज़िलों में गेहूँ की अच्छी खेती होती है।

3. बिहार में पश्चिम चम्पारण, समस्तीपुर, बेगुसराय, मुजफ्फरपुर, खगड़िया और रोहतास प्रमुख सरसों उत्पादक ज़िले हैं।

नीचे दिये गये मानचित्र में दर्शाएँ

क. धान उत्पादक क्षेत्र

ख. गेहूँ उत्पादक क्षेत्र

ग. सरसों उत्पादक क्षेत्र

इसके बाद सुलेमान जी हम बच्चों को बाज़ार के दूसरे हिस्से में लेकर गए। कुछ ठेलों पर ढेर सारे टीन के खाली कनस्तर लदे हुए थे। सुलेमान जी ने बताया कि ये सरसो तेल के खाली डिब्बे हैं जिन्हें खुदरा व्यवसायी हमारे-तुम्हारे घरों से खरीदकर लाते हैं। बिहार में खाने में अधिकांशतः सरसो तेल का प्रयोग होता है। गाँवों में किसान जो प्रायः अपने उपभोग के लिए सरसों उपजाते हैं वे नजदीकी पेराई मिल में सरसों ले जाकर पेराई करा कर तेल एवं खल्ली ले आते हैं तथा पेराई का मूल्य दे देते हैं। खल्ली जानवरों के भोजन के रूप में काम आती है। कुछ ऐसे दुकानदार (पेराई मिल वाले) भी होते हैं जो सरसों लेकर एक निश्चित अनुपात में उन्हें तेल दे देते हैं

बिहार में उत्पादन के प्रायः सम्पूर्ण भाग की खपत अपने प्रदेश में ही हो जाती है। शेष आवश्यकताओं की पूर्ति राजस्थान तथा अन्य प्रदेशों से होती है। वहाँ से सरसों तेल विभिन्न प्रकार के पैकिंग के रूप में आते हैं। सुलेमान जी ने कहा, 15 किलोग्राम के पैक इन्हीं कनस्तरों में आते हैं जो आप चित्र में देख रहे हैं। ये खाली कनस्तर पुनः उन्हीं तेल कारखानों या पैकेजिंग स्थल पर भेज देते हैं।

इसके बाद सुलेमान जी हम लोगों को मंडी के उस हिस्से में लेकर गये, जिसमें मक्का (मकई) की खरीद-बिक्री होती है।

बिहार मक्का का प्रमुख उत्पादक राज्य है। बिहार में मक्का बहुत लोगों का आहार भी है। यहाँ लोग मक्का के सत्तू, रोटी एवं दर्रे का प्रयोग खाने में करते हैं। सुलेमान जी ने बताया कि मक्का किसानों से स्थानीय छोटे व्यापारी खरीदते हैं। ये व्यापारी इसे मंडी के थोक व्यापारी को बेचते हैं। थोक व्यापारी इन्हें मिलों में बेचते हैं। ये मिल वाले जानवरों एवं मुर्गियों का चारा बनाते हैं। किसान सीधे अगर मंडी में आकर या चारा बनाने वाली मिलों को बेचते तो उन्हें उनके मक्के का अधिक मूल्य मिलता। नियंत्रित मंडी में किसान खुली नीलामी द्वारा अपना उत्पाद बेचते तो उन्हें उनकी फसल का उचित मूल्य मिलता। लेकिन बिहार में नियंत्रित मंडी की व्यवस्था नहीं के बराबर है। इस कारण किसान अपनी फसल को स्थानीय व्यवसायियों व निजी मिलों को बेचने को बाध्य रहते हैं। किसानों की इस मजबूरी का फायदा उठाकर व्यवसायी उन्हें फसल का उचित मूल्य नहीं देते हैं। प्रायः यह मूल्य न्यूनतम समर्थन मूल्य से काफी कम होता है। यदि मंडी तक सभी किसानों की पहुँच हो जाये तो उन्हें अपनी फसल का

पूर्वी बिहार और कोसी इलाके में मक्का की काफी अच्छी खेती हो रही है। यहाँ से करीब 6 लाख टन मक्का प्रतिवर्ष दूसरे राज्यों और देशों को भेजा जा रहा है

**कहाँ और कैसे**

कोसी इलाकों से जैसे नवगछिया, मानसी, सिमरी बख्तियारपुर, समस्तीपुर और गुलाबबाग (पूर्णिया) जैसी जगहों से मक्का रेलवे द्वारा पंजाब, हरियाणा, उत्तराखण्ड तथा आंध्रप्रदेश को जाता है। दिल्ली, प. बंगाल, उत्तरप्रदेश और झारखण्ड में ट्रकों से मकई भेजा जाता है। कोलकाता होते हुए यह मक्का बंगलादेश को जाता है तथा विशाखापट्टनम् और मुंबई के बंदरगाहों से यह मक्का पानी के जहाज़ से अर्जेन्टीना और मलेशिया तक जाता है।

उचित मूल्य मिलने लगेगा। इससे स्थानीय व्यापारी भी किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य देने को बाध्य हो जायेंगे।

1. इन फसलों में से दो फसलों के बाज़ार की कड़ियां (किसान से उपभोक्ता) का रेखा-चित्र बनाएँ, जो आपके इलाके में उगाया जाता है।
   (i) गेहूँ (ii) मक्का (iii) दलहन (iv) सरसों
2. आपके आसपास कोई मिल है क्या? वहाँ फसल कैसे पहुँचती है? पता लगाएँ।
3. सरकार द्वारा चलायी गयी नियंत्रित मंडी क्या है? शिक्षक के साथ चर्चा करें।
4. बिहार में मक्का उद्योग लगाने की काफी संभावनाएँ हैं। जिनमें मक्के के विभिन्न उत्पाद जैसे-स्टार्च, बेबीकॉर्न, पॉपकॉर्न, कॉर्न-फ्लेक्स, मक्के का आटा, मुर्गियों का चारा, मक्के का तेल आदि बनाए जा सकता है इनके क्या फायदे नुकसान हैं, चर्चा करें।

**?**

## बागान से मंडी

अब दिन के दो बज चुके थे। हमें भूख लग गई थी और हम काफी थक भी गए थे। शिक्षक ने कहा, "अब हमलोगों को चलना चाहिए। अगले सप्ताह फलों की मंडी पटना के 'बाज़ार समिति' चलेंगे।"

अगले सप्ताह हम सुबह-सुबह फल मंडी पहुँचे। यहाँ चारों ओर फलों की ही दुकानें थीं। कहीं आम ही आम नज़र आ रहे थे तो कहीं केले की बड़ी-बड़ी आढ़त थी। कहीं सेब ही सेब थे तो कहीं नारंगी की ढेर और कहीं अंगूर की बहुत सारी पेटियाँ रखी हुई थीं। कहीं आम की सुगंध तो कहीं सड़े नारंगी की बदबू आ रही थी। हमारे शिक्षक के अनुरोध पर महताब साहब फल मंडी के बारे में जानकारी देने के लिए तैयार हो गए।

सबसे पहले महताब साहब हमें फल मंडी के उस भाग की ओर ले गए जहाँ आम व लीची के बड़े-बड़े टोकरे और पेटियाँ रखी हुई थीं। यहाँ कई तरह के आम नज़र आ रहे थे। कुछ आम कच्चे तथा कुछ आम पके थे। कई प्रकार की लीचियाँ थीं, कुछ बड़े, कुछ आकार में छोटे और सूखे। ये बागान से फल मंडी तक पहुँचने में देर होने के कारण सूख गए थे।

फलों के बागान से फल मंडी तक पहुँचने एवं फल मंडी से उपभोक्ता तक पहुँचने में कई चरण होते हैं और इसमें कई लोग शामिल होते हैं। महताब साहब ने सबसे पहले हमें आमों के बारे में बताया। बिहार के विभिन्न हिस्सों में कई तरह के आम पैदा होते हैं। पटना शहर के दीघा का दूधिया मालदह एवं भागलपुर का जर्दालु आम अपने स्वाद और सुगंध के लिए काफी प्रसिद्ध हैं। इन्हें बिहार से बाहर भी भेजा जाता है।

इस मंडी में आम बिहार के कई हिस्सों से आता है। फल मंडी से छोटे दुकानदार, ठेलेवाले और टोकरियों में फल बेचनेवाली महिलाएँ फल खरीदती हैं। इस प्रकार पटना के बाजारों और मोहल्लों में फल पहुँचता है।

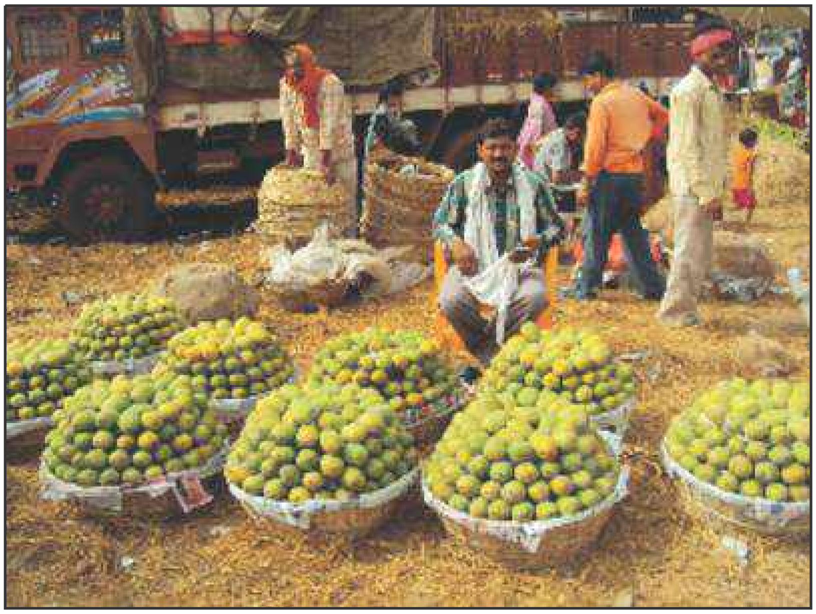

महताब साहब ने बताया कि बागान से मंडी तक आम कई कड़ियों से होकर आता है।

**पहला** व्यापारी किसानों से उनके आम के बागान को मंजर आने के बाद खरीद लेते हैं। वे पेड़ की धुलाई एवं कीटनाशक का छिड़काव अपने स्तर से करते हैं। वे किसान से यह

करार करते हैं कि आगे उत्पादन का कुछ हिस्सा वह किसान को देंगे। फल आने के बाद वह आम को तोड़कर और ट्रकों से फल मंडी में पहुँचाते हैं।

**दूसरा–** व्यापारी किसानों से उनके आम के बगीचे तीन या पाँच साल की अवधि के लिए भी खरीद लेते हैं एवं किसान को पैसे के अलावा प्रत्येक वर्ष फल आने पर उत्पादन का कुछ हिस्सा देते हैं।

**तीसरा–** कुछ बड़े किसान खुद अपने आम को बागान से तोड़कर मंडी तक पहुँचाते हैं। इसमें इन्हें ज़्यादा कमाई होती है।

इसके बाद महताब साहब ने आम मंडी से सटी लीची मंडी में ले जाकर हम लोगों को लीची के बारे में बताया। लीची भी इन्हीं बाजार मंडियों से होकर जगह-जगह और देश के कोने कोने तक पहुँचती है। भारत का कुल लीची उत्पादन का लगभग 80 प्रतिशत बिहार में होता है। यहाँ की शाही लीची काफी प्रसिद्ध है। मुजफ्फरपुर क्षेत्र में सबसे ज़्यादा लीची उत्पादन होता है। इसलिए मुजफ्फरपुर से ट्रेन एवं ट्रक से लीची कानपुर, दिल्ली, मुम्बई एवं देश के कई बड़े शहरों में व्यापारियों के माध्यम से भेजी जाती है। मुजफ्फरपुर में कई लीची प्रसंस्करण उद्योग हैं, जिसमें लीची से जूस, जैम, जेली, मधु आदि बनाए जाते हैं।

फलों एवं सब्जियों को ज़्यादा समय तक बचाये रखना संभव नहीं होता क्योंकि वे जल्दी खराब हो जाते हैं। इसलिए इनको अधिक समय तक बचाए रखने के लिए शीत-गृहों का निर्माण किया जाना चाहिए। शीत-गृहों में अधिक समय तक इनका सुरक्षित भंडारण किया जा सकता है। किन्तु वर्षों में

सरकार ने इस दिशा में कई सकारात्मक कदम उठाए हैं

बागवानी फसलें, जैसे कि फलों का विकास तभी संभव है जब इनकी प्रसंस्करण इकाइयाँ लगायी जाएँ। इनके कई उत्पाद इन इकाइयों द्वारा तैयार की जाय। फल प्रसंस्करण इकाइयाँ लगाने की बिहार में काफी संभावना है इस दिशा में सरकार के द्वारा काफी प्रयास हुए हैं

इसके बाद महताब साहब हमें फल मंडी के उस भाग में ले गये जहाँ केले के बड़े-बड़े ढेर थे। यहाँ केले के बड़े-बड़े घौंद नजर आ रहे थे। फल मंडी में केला मुख्यतः वैशाली एवं आस-पास के क्षेत्रों तथा नवगछिया एवं भागलपुर क्षेत्र से आता है। पूरे राज्य का लगभग 50 प्रतिशत केला इन्हीं क्षेत्रों में पैदा होता है। केला उत्पादक किसान प्रायः केला स्थानीय व्यापारियों को खेतों में ही बेच देते हैं। स्थानीय व्यापारियों से केले के थोक व्यापारी खरीद कर इन्हें ट्रकों से फल-मंडी भेज देते हैं।

अब धूप तेज होने लगी थी। कुछ बच्चे वहाँ ठेले पर बिक रहे गन्ने के रस को पीने की इच्छा जाहिर करने लगे।

रस पीते हुए महताब साहब ने कहा कि इस मंडी में ईख भी आते हैं लेकिन गन्ना सिर्फ इन्हीं रस बेचने वालों द्वारा खरीदे जाते हैं। गन्ने द्वारा मुख्यतः चीनी और गुड़ बनाया जाता है। कई गन्ना उत्पादक किसान जिनके क्षेत्र में चीनी मिलें चल रही हैं, वहाँ सीधे मिल को गन्ना बेच देते हैं। इसमें उन्हें काफी अच्छा मुनाफा होता है। लेकिन कई छोटे किसान तथा वैसे किसान जिनके आस-पास चीनी मिल नहीं है, गन्ने की पेराई कर गुड़ बना लेते हैं। गुड़ की भी अच्छी कीमत किसानों को मिल जाती है। हालाँकि

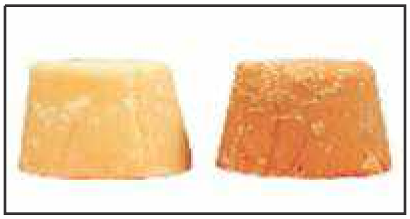

गुड़ बनाने में अधिक श्रम तथा समय लगता है। गन्ना बिहार की प्रमुख व्यवसायिक फसल है। दुर्भाग्य है कि आज बिहार की लगभग सभी मिलें बन्द हैं।

## जूट

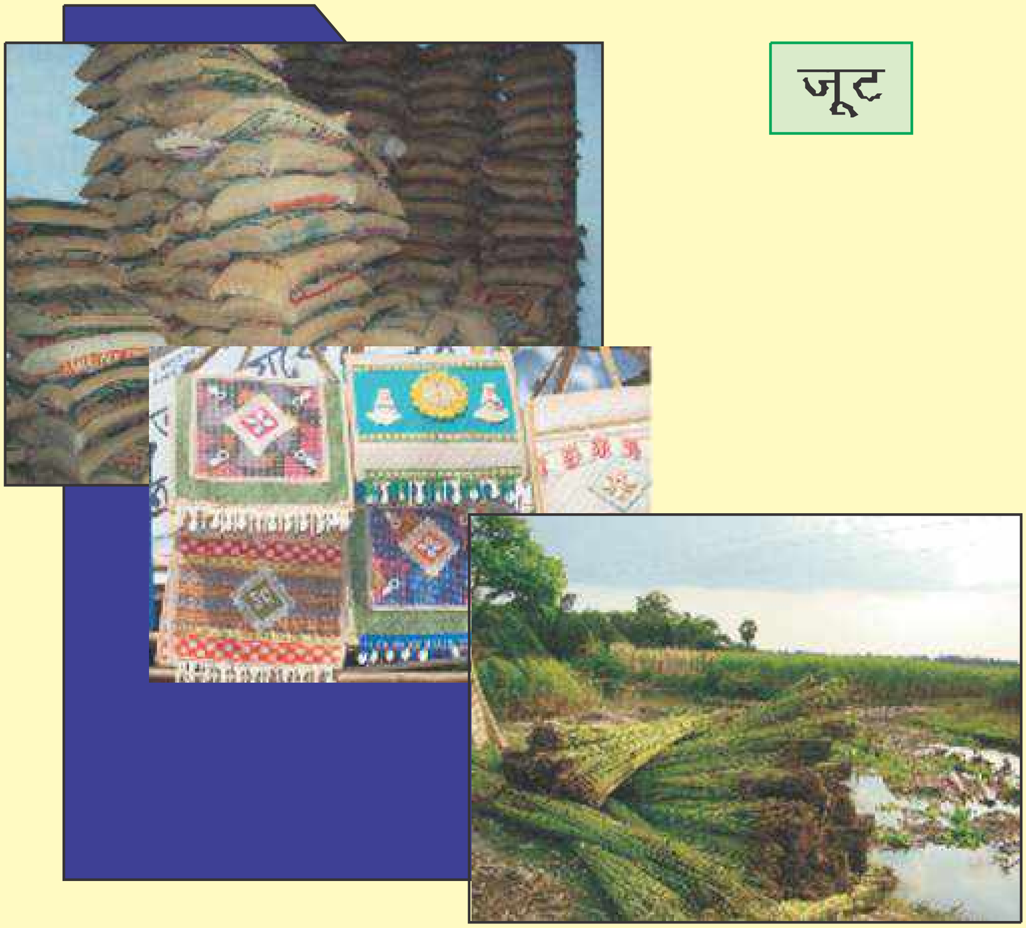

जूट बिहार की एक प्रमुख फसल है। पूर्णिया, किशनगंज तथा कटिहार जिले में इसका अधिक उत्पादन होता है। पूर्णिया के गुलाबबाग में जूट की बहुत बड़ी मंडी है। जूट का उपयोग मुख्यत: पैकेजिंग, कार्पेटिंग तथा वस्त्र उत्पादन धंधे में होता है। पर्यावरण संरक्षण कारकों से जूट और उससे निर्मित वस्तुओं की माँग एवं बाजार निरंतर बढ़ रहा है। बिहार में जूट आधारित उद्योग लगाने की काफी संभावनाएँ हैं। इससे किसानों को भी फायदा होगा।

1. शीतगृहों के निर्माण से किसे फायदा हो सकता है? चर्चा करें।
2. अपने घर और आस-पास से पता करें कि पिछले 15 वर्षों में लोगों की फल की खपत में क्या-क्या परिवर्तन आए और क्यों?
3. बिहार में फल प्रसंस्करण आधारित उद्योग लगाने की क्या-क्या संभावनाएँ हैं? चर्चा करें।
4. 'स्वतंत्रता के पूर्व बिहार को देश का चीनी का कटोरा कहा जाता था। 1942-43 में राज्य में कुल 33 चीनी मिलें थीं जबकि देश भर में सिर्फ 140 चीनी मिलें थीं। वहीं 2000 तक राज्य में चीनी मिलों की संख्या घट कर सिर्फ 10 रह गई जबकि भारत वर्ष में चीनी मिलों की संख्या बढ़कर 495 हो गयी।'

   पता करें यह बदलाव कैसे हुआ?
5. बिहार में चंपारण, सारण, गोपालगंज, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, पूर्णिया, पटना एवं सहरसा प्रमुख गन्ना उत्पादक जिले हैं, इन्हें मानचित्र में दिखाएँ।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

बाज़ार की कड़ियों को समझते हुए हमने देखा कि किसान की फसल मंडी या मिल तक कैसे पहुँचती है। कुछ किसानों को फसल का उचित भाव मिल पाता है परंतु बहुत से छोटे किसान इससे वंचित रहते हैं। इस स्थिति में परिवर्तन के कई सुझाव भी सामने आए।

हमने यह भी समझा कि थोक बाज़ार या मंडी के कारण फसल एक जगह पहुँचती है और फिर दूर-दूर के उपभोक्ताओं तक अन्य व्यापारियों द्वारा पहुँचाया जाता है। इन कड़ियों को समझते हुए कई संभावनाओं के फायदे नुकसान पर विचार किया जा सकता है। उदाहरण के लिए शीतगृहों का होना, उद्योग लगाना, फसलों में बदलाव लाना आदि। असमानता को कम करने के लिए यह ज़रूरी है कि मंडी व्यवस्था बेहतर बने और इसका लाभ छोटे और गरीब किसानों तक पहुँचे।

## अभ्यास

1. आपके अनुसार अरहर किसान से किस प्रकार आपके घर में दाल के रूप में पहुँचता है? दिये गए विकल्पों में से खाली बॉक्स भरें।

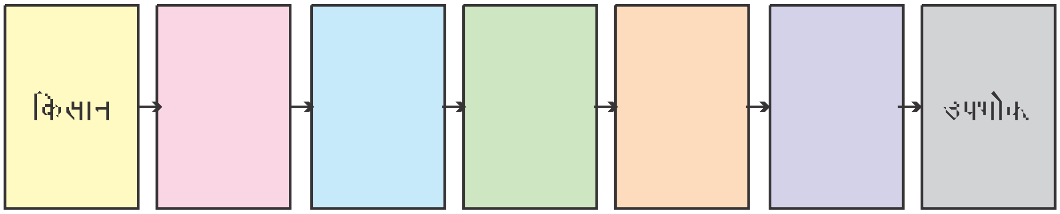


विकल्प –

(i) दाल मिल
(ii) खुदरा व्यवसायी
(iii) स्थानीय छोटे व्यवसायी
(iv) बड़ी मंडी के थोक व्यवसायी
(v) स्थानीय मंडी के थोक व्यवसायी

**2. स्तंभ 'क' को स्तंभ 'ख' से मिलान करें।**

| **स्तंभ क** | **स्तंभ ख** |
|---|---|
| (i) शाही लीची | (क) भागलपुर |
| (ii) दुधिया मालदह | (ख) मुजफ्फरपुर |
| (iii) मखाना | (ग) दीघा (पटना) |
| (iv) जर्दालु आम | (घ) दरभंगा |

3. कृषि उपज के न्यूनतम समर्थन मूल्य से आप क्या समझते हैं? इससे किसानों को क्या फायदा होता है?

4. निम्नलिखित फसलों से बनाये जाने वाले विभिन्न उत्पादों को लिखें। इन उत्पादों को बनाने के लिए क्या किया जाना चाहिए?

| क्रम सं. | फसल | उत्पाद |
|---|---|---|
| 1 | गेहूँ | |
| 2 | मक्का | |
| 3 | लीची | |
| 4 | गन्ना | |
| 5 | जूट | |

5. निम्नलिखित फसलों के सामने के खाली बॉक्स को भरें।
अपने आस-पास के अनुभव के आधार पर

| क्रम | फसल | किस स्थानीय मंडी में बेचा? | किसान को कितना फायदा हुआ? | यहाँ से कहाँ पहुँचाया जाता है? |
|---|---|---|---|---|
| 1 | चावल | | | |
| 2 | गेहूँ | | | |
| 3 | मक्का | | | |
| 4 | धान | | | |
| 5 | केला | | | |

6. दिये गए चित्र में गुप्त रूप से आम का भाव तय किया जा रहा है। खुली नीलामी प्रक्रिया इससे कैसे भिन्न है, चर्चा करें।

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

अध्याय 11

# समानता के लिए संघर्ष

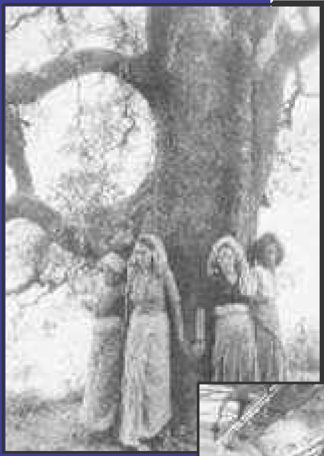

अब तक हम लोगों ने पुस्तक के सभी अध्यायों को पढ़ा। पुस्तक के प्रथम अध्याय में हमने देखा कि पूनम और ज्योति, मतदाता पहचान पत्र बनवाने की लाइन में खड़े थे। वहाँ सभी व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के — जाति, धर्म, रंग-रूप, अमीर-गरीब आदि, एक कतार में खड़े थे। इसी प्रकार बाल संसद की चुनावी प्रक्रिया यह दर्शाती है कि सभी बच्चों को मत देने का समान अधिकार है। वहीं दूसरी ओर इसी पाठ में [illegible] और शालिनी के बीच हम असमानता को देखते हैं।

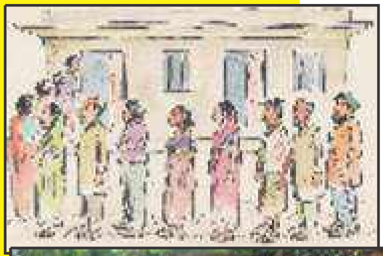

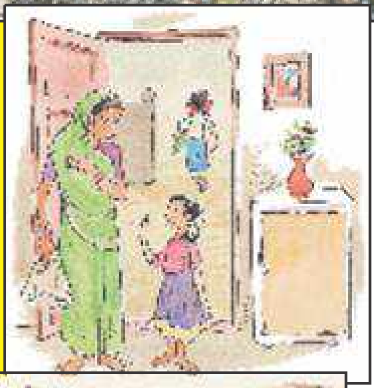

इसी पुस्तक के दूसरे अध्याय में हमने विधायक के चुनाव में व्यस्क व्यक्तियों को मतदान करते हुए देखा। यह मत हम समान रूप से देते हैं। किसी के मत (वोट) का महत्व दूसरे से कम या ज्यादा नहीं होता है। इसी पाठ में सरकार द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों जैसे– मध्याह्न भोजन, पोशाक योजना तथा साइकिल योजना में समानता के भाव को देखा। वहीं स्वास्थ्य एवं शिक्षा सुविधा आम आदमी को अभी नहीं मिल पा रही है, जो असमानता को बढ़ाता है।

जावेद एवं शबाना को विकसित होने के समान अवसर प्रदान किये गये। वहीं दूसरी ओर श्यामा चाहती है कि वो पढ़े लिखे, खेल कूद में भाग ले, परंतु उसके परिवार ने इसकी इजाज़त नहीं दी। गुड़िया, पूजा एवं अन्य महिलाओं के संगठित प्रयास से समाज में बदलाव के संकेत दिखते हैं।

हमने मीडिया और लोकतंत्र में पढ़ा कि मीडिया सरकार द्वारा घोषित नीतियों, कार्यक्रमों को जनता तक पहुँचाती है और उनका विचार बनाने में मदद करती है। दूसरी ओर आम आदमी के दैनिक जीवन की महत्वपूर्ण समस्याओं पर ध्यान नहीं देती है। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के बाजारों के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। हमने यह भी देखा कि रामजी, गाँव का छोटा दुकानदार बहुत कम लाभ कमा पाता है और बड़े व्यवसायी कहीं अधिक। यही विसंगति विज्ञापन के प्रसारण में भी पायी जाती है। जहाँ एक ओर बड़ी बड़ी हस्तियों से जुड़े विज्ञापन जाते हैं तो दूसरी ओर आम आदमी से संबंधित समस्याओं एवं छोटे छोटे व्यापारियों के हितों को उपेक्षित किया जाता है।

इस पुस्तक के विभिन्न अध्यायों से एक बात

सामने आयी कि हम समानता यानी समान अवसर पाने की इच्छा रखते हैं। यह सच है कि समान व्यवहार होना चाहिए, किन्तु, किसी न किसी रूप में असमानता नज़र आती है।

कई बार हमें अपनी उम्मीदों से निराश भी होना पड़ता है। परंतु हमने यह भी जाना कि लोग सवाल पूछते हैं, आवाज़ उठाते हैं, न्याय के लिए संघर्ष का रास्ता ढूँढ़ते हैं और समानता की इच्छा को बनाए रखते हैं। इसका सबसे सटीक उदाहरण गंगा बचाओ आन्दोलन है जहाँ मछुआरों ने अपने त्रस्त जीवन को संघर्ष के बदौलत खुशियों में बदल दिया।

## जीवन-दायिनी गंगा के लिए संघर्ष

कलह की नैय्या बनी है हा मजहब,
गंगा को पार दे उतार।
डपक-डनक चले [illegible] नैय्या हो मलहवा,
आहि पूरबईया बयार।
गंगा के पार भैया, लागे न ओर नैय्या।
मुखवा से चले न पतवार
तीन रुपया भैया गंगा की कमइयाँ
दो रुपया लिए जमींदार।
बिलख-बिलख के बच्चा रोवे,
जली रोवे नार बेजार।
दूषित जल भैया, भागे मछलिया,
गंगा के नाम पर चले ठीकेदरिया।।
मछुआ सब हो ले अब बेकार।
भाई बहन मिल कर अब लड़इयाँ,
गंगा पर हक है हमार।
करो जमींदारी कानून तो टूटल।
हमर नसीबा काहे तो कूटल
सोचे न कोई सरकार।

(गंगा के अविरल बहने [illegible]) — कृष्ण चंद्र चौधरी

गंगा अतीत काल से बहती हुई अपने प्रवाह क्षेत्र के लिए जीवनदायिनी बनी हुई है। सभी जो गंगा के मैदानी इलाकों में सभ्यता काफी फली-फूली। बिहार के लिए गंगा जीवनदायिनी रही है। गंगा आधारित सिंचाई, यातायात तथा मछली व्यवसाय पर जीवन-यापन करने वालों की एक बड़ी जमात बिहार में है। दबंगों एवं ज़मींदारों की नजरें इस कारण गंगा पर गईं। मछली मारने वाले मछुआरों, नाव चलाने वाले मल्लाहों आदि से मछली और नौका का जल हेतु कर वसूलने का प्रचलन शुरू किया गया। पुराने समय से चली आ रही व्यवस्था आज़ादी के बाद भी कायम रही जो आगे चलकर ठेकेदारी का रूप ले ली।

मछुआरो ने सहकारी समिति को गठित किया। बन्दोबस्ती ली। उससे कहीं अधिक और अधिक मछुआरों और मल्लाहों का शोषण शुरू हो गया। ठेकेदारों और सहकारी समिति से बड़े मछुआरे ने घाटे पर घाट एवं नदी का क्षेत्र निर्धारित कर लिया। वे आगे छोटे मछुआरों और फिर उससे छोटे मछुआरों को देने लगे। इस प्रकार शोषण कई प्रकार से होने लगा। मल्लाहो और मछुआरों में बेचैनी बढ़ने लगी। उनकी रोटी दिन प्रतिदिन छिनती जा रही थी।

इसी बीच सरकार ने गंगा नदी पर फरक्का नामक स्थान पर एक बांध का निर्माण कर दिया। गंगा में समुद्र से मछलियों एवं जीरे का बहाव (आना) बन्द हो गया। परिणामतः गंगा में मछलियों की अप्रत्याशित कमी हो गयी। मछुआरों के समक्ष भूखों मरने की नौबत आ गयी।

इसी दौर में गंगा के दोनों किनारों पर फैक्टरियाँ लगीं। इनसे निकलने वाले कचरे से गंगा और भी प्रदूषित हो गई। इस प्रदूषण से मछलियाँ न केवल मरने लगीं बल्कि उनकी प्रजनन क्षमता भी कम हो गयी। मरता क्या नहीं करता। जीने के न्यूनतम अधिकारों को समाप्ति से त्रस्त मछुआरों ने अपने हक के लिए संघर्ष का ऐलान 1982 में कहलगाँव के कागजी टोला से किया। संघर्ष हेतु लिए गए संकल्पों में गंगा से जलकर समाप्ति, जाति प्रथा तोड़ने, शराबबन्दी बन्द करने, महिलाओं के बराबर की हकदारी आदि प्रमुख थे। संघर्ष के क्रम में मछुआरों ने कई संगठनों का निर्माण किया। धरना-प्रदर्शन, लम्बी नौका यात्रा, प्रशिक्षण शिविर तथा महिलाओं की सक्रिय भागीदारी का शान्तिपूर्ण प्रयास किए गए। ऐसे प्रयास का सार्थक प्रभाव पड़ने लगा। संघर्ष का विस्तार बिहार में गंगा के दोनों किनारों पर हो गया। इस आन्दोलन को दबाने का

व्यापार सहकारी समितियों तथा ठेकेदारों द्वारा किया जाने लगा किन्तु मछुआरों और मल्लाहों के शान्तिपूर्ण संघर्ष को दमनकारी प्रयासों से कुचला नहीं जा सका। यह संघर्ष इतना सशक्त एवं प्रभावशाली रहा कि आठ-नौ वर्ष पूरा होते-होते, वर्ष 1990 में गंगा पर सुल्तानगंज से पीरपैंती तक मुगलकाल से चली आ रही जमींदारी व्यवस्था को सरकार ने समाप्त कर दिया। पुनः ठीक एक वर्ष के भीतर ही 1991 में सरकार ने राज्य को जलकर से मुक्त करने की घोषणा कर दी। इससे सम्बन्धित कानून बना दिये गये। आज गंगा नदी के किनारे बसे मछुआरों को किसी भी प्रकार का कर नहीं देना पड़ता है। संघर्ष के परिणामस्वरूप उनका शोषण बन्द हो गया तथा आजीविका का अधिकार प्राप्त हुआ।

1. मछुआरे किन बातों से परेशान थे? उन्होंने इसके लिए क्या किया?
2. क्या कुछ समस्याएँ आज भी बनी हुई हैं? इनके लिए क्या करना चाहिए?

?

पुस्तक के विभिन्न अध्यायों में हमने कई बार यह पढ़ा कि असमान व्यवहार से लोगों की गरिमा को किस तरह ठेस पहुँचती है। उन्हें बुरा लगता है क्योंकि वह समान व्यवहार की अपेक्षा करते हैं। लोगों के मन में विचार उठता है कि समान व्यवहार क्यों नहीं होता। समाज ऐसा क्यों है? बदलाव कैसे हो सकते हैं? कहीं-कहीं आक्रोश जन्म लेता है। प्रभावित लोग संगठित होने लगते हैं तथा किये जा रहे उपेक्षापूर्ण व्यवहार पर अपनी आवाज़ उठाकर संघर्ष आरंभ करते हैं।

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

## इतिहास की नज़र से

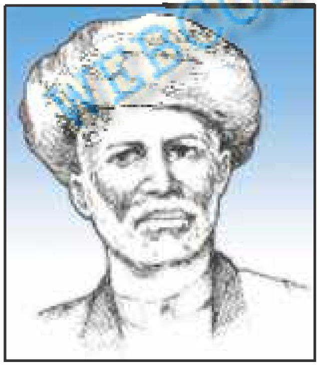

ज्योतिबा फूले

भारतीय समाज जातियों एवं धर्मों में बंटा है। यहाँ ऊँच-नीच, जाति-प्रथा, छुआ-छूत, जैसी कई कुरीतियाँ पायी जाती रही हैं। महिला अशिक्षा और उनके साथ असमान व्यवहार तथा समाज में धन का असमान वितरण जैसी समस्याएँ आज भी विद्यमान है। उपरोक्त असमानता के विरुद्ध समय-समय पर आन्दोलन भी हुए हैं। इस क्रम में ज्योतिबा फूले ने सत्यशोधक समाज के बैनर तले दलित जातियों के उत्थान हेतु प्रभावशाली आन्दोलन किया। महात्मा गाँधी, डॉ० राम मनोहर लोहिया तथा लोकनायक जयप्रकाश नारायण भी जाति-प्रथा एवं छुआ-छूत जैसी कुरीतियों के खिलाफ निरंतर संघर्षरत रहे।

सावित्री बाई फूले ने महिला शिक्षा एवं समानता के लिए महत्त्वपूर्ण संघर्ष किया। संविधान द्वारा समानता के अधिकार दिये जाने में डॉ॰ भीमराव अम्बेदकर की प्रमुख भूमिका रही है।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण

विनोबा भावे के द्वारा भूमिहीन किसानों को भूमि उपलब्ध कराने हेतु किए गए भूदान आंदोलन का भी कई भूपतियों द्वारा समर्थन किया गया। इतने सालों के बावजूद अभी भी ढेरों ऐसी समस्याएँ हैं जिनके खिलाफ लड़ जाने की जरूरत है। इसलिए कहा जाता है– "हौसले बुलन्द हो तो फासले करीब हो, हो जिनमें दम उनसे मंजिलें क्या दूर हैं"। ऐसे और भी संघर्ष एवं आंदोलन का वर्णन हम अगले वर्ग में जानेंगे।

## अभ्यास

1. अपने विद्यालय या आस-पास में समानता तथा असमानता दर्शाने वाले दो-तीन व्यवहारों को लिखें।
2. क्या साइकिल वितरण, पोशाक वितरण, मध्याह्न भोजन वितरण, छात्रवृत्ति वितरण से समान असमान व्यवहार का भाव झलकता है ? कैसे।
3. अपने इलाके के संदर्भ में कुछ संघर्ष के मुद्दों को बताएँ।
4 अपने क्षेत्र के कुछ प्रदर्शनों या आन्दोलनों में से किसी एक की चर्चा करें।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED